

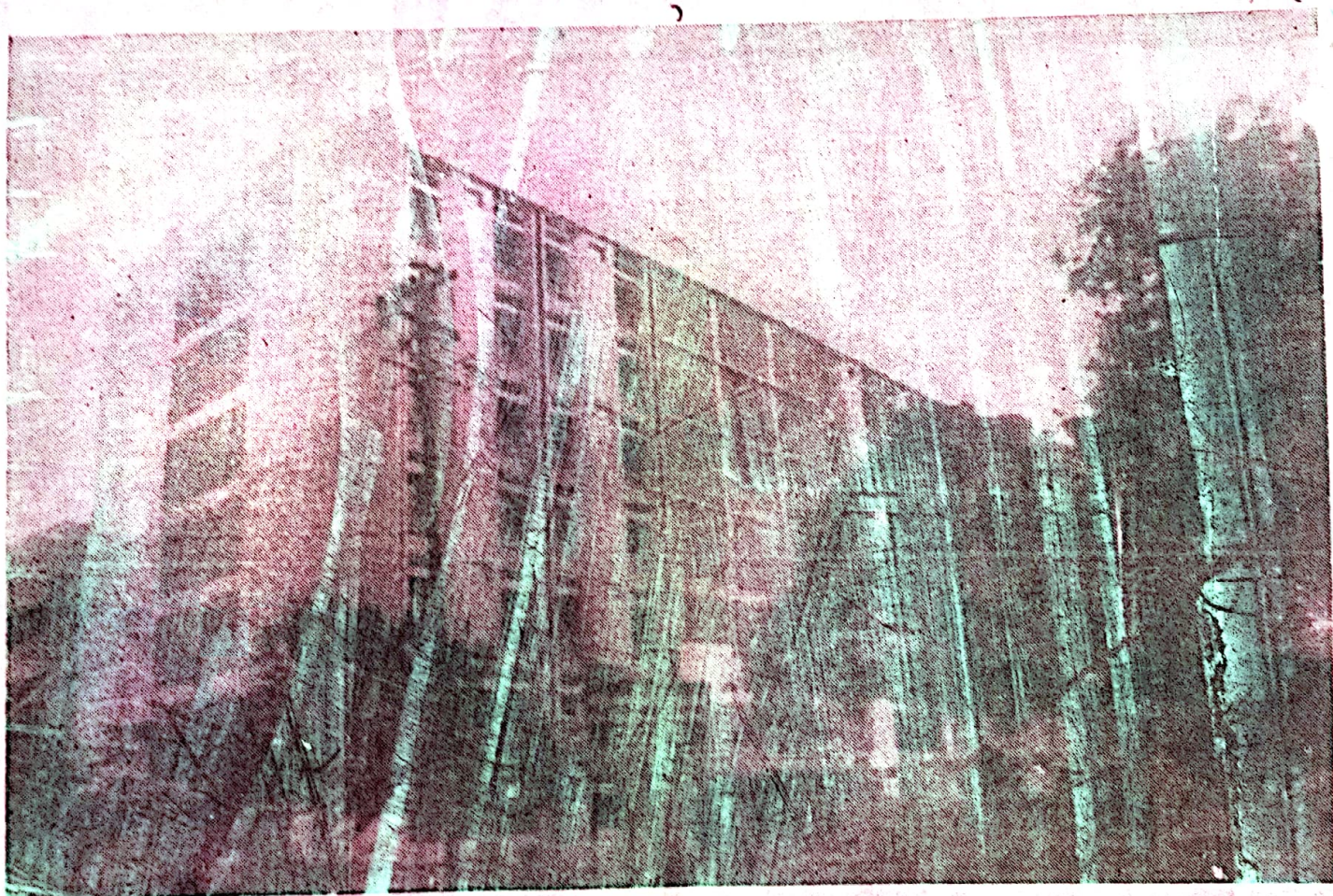


बिहार साहित्य अकादमी

चौतनी

सातवीं अंक

सितम्बर, १९९५



बहालैलाकार (लैन्ग एलं हकदारी) II, बिहार, पटना
का कार्यालय

“सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते ।
मृजया रक्ष्यते रूपं कुल वृत्तेन रक्ष्यते ।”

अर्थात्

“सत्य के द्वारा धर्म की रक्षा होती है । अभ्यास से विद्या की रक्षा होती है । उद्वर्तन (उबटन) से रूप की रक्षा होती है तथा कुल की रक्षा आचरण (चरित्र) से होती है ।”

—विदुरनीति: (महात्मा विदुर)

आवरण-परिचय

कार्यालय-भवन, बिहार, पटना

1500, राहली, II (३३) चेतना

अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका
(सातवां अंक)

100 008—1500, राहली, II (३३) चेतना

1000, राहली—

कन्याशाला—

100 008—1500, राहली, II (३३) चेतना



लोकनियम सत्यनिष्ठा

1500, राहली, II (३३) चेतना

कन्याशाला—

1500, राहली, II (३३) चेतना

1500, राहली, II (३३) चेतना

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारो) - II बिहार, पटना

का कार्यालय

स्वत्वाधिकारः महालेखाकार (ले. एवं ह.) II, बिहार, पटना

प्रकाशन :—चेतना

अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका

प्रकाशक :—महालेखाकार (ले. एवं ह.) II, बिहार, पटना का कार्यालय, पटना—800 001

अंक :—सातवां अंक

—सितम्बर, 1995

मूल्य :—निःशुल्क

मुद्रक :—बिहार राज्य शिक्षक सहयोग संघ लि० प्रेस, एकजीविशन रोड, पटना—800 001

अमर भारती की इस लाडली “हिन्दी” के स्वरो में भारत की राष्ट्रीय आत्मा बोलती है।

—डॉ० सम्पूर्णानन्द

हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशील विरासत है।

—माखन लाल चतुर्वेदी

हिन्दी का उद्देश्य यही है, भारत एक रहे अविभाज्य,
यों तो रूस और अमरीका, जितना है उसका जनराज्य।
बिना राष्ट्रभाषा स्वराष्ट्र की, गिरा आप गूँगी असमर्थ,
एक भारती बिना हमारी भारतीयता का क्या अर्थ।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

चेतना परिषद्

संरक्षक ।

श्री पी० के० मुखोपाध्याय

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, बिहार, पटना

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति :

श्री स्वरूप नन्दव्योमयार,

वरिष्ठ उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री पी० के० तिवारी

उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री शिव कुमार गुप्ता

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, बिहार, पटना

सम्पादक मण्डल ।

प्रधान संपादक : श्री सतीश चन्द्र सिन्हा,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, बिहार, पटना

संयुक्त सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र कुमार,

अनुभाग अधिकारी, हिन्दी कक्ष

महालेखाकार (ले० एवं ह०) II, बिहार, पटना

का

संदेश

मुझे इस बात के लिए अपार हर्ष है कि विज्ञ पाठकों के कर कमलों में "चेतना" पत्रिका के सातवें अंक को शीघ्र समर्पित किया जा रहा है। इसके प्रकाशन पर हार्दिक बधाई।

इस पत्रिका ने राजभाषा हिन्दी के प्रति सदा सहृदय पाठकों की चेतना जगायी है। आशा है यह पत्रिका हिन्दी के उत्थान के लिए अनवरत प्रयत्नशील रहेगी। मैं पत्रिका के संपादक-मंडल, रचनाकारों एवं परामर्शदातृ समिति को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मैं पत्रिका की दिनानुदिन प्रगति की कामना करता हूँ।

(प्र० कु० मुखोपाध्याय),
महालेखाकार (ले० एवं ह०) II,
बिहार, पटना

(5)

बी. के. भाटिया
हिन्दी अधिकारी एवं सचिव
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
B. K. Bhatia
Hindi officer and Secretary
Town official language
Implementation committee



बिहार सर्किल
मेघदूत भवन, पटना
BIHAR CIRCLE
Meghdoot Bhawan
PATNA—800 001
फोन Tel ; 223279

पत्र सं० : हिन्दी/राजभाषा सम्मेलन/95

दिनांक/Date 1-8-95

सेवा में,

महालेखाकार,

(ले० ह०) II, बिहार, पटना

मान्यवर,

जैसा कि आप जानते हैं पटना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नगर स्थित केन्द्रीय कार्यालयों/एपक्रमों निगमों में राजभाषा नियमों के पालन एवं सरकारी काम-काज में हिन्दी में हो रहे कार्यों का लेखा जोखा एवं समीक्षा का कार्य करती है तथा हिन्दी में किये गये सर्वोत्तम कार्य के लिए शील्ड प्रदान करती है। आपके कार्यालय को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सर्वोत्तम कार्य हेतु वर्ष 1992-93 के लिए शील्ड प्रदान किया गया था। मैंने यह निर्णय लिया है कि जिन कार्यालयों को शील्ड प्रदान किया जाय उन्हें प्रमाणपत्र भी अवश्य दिया जाना चाहिए जो उसके कार्यालय में रिकार्ड के रूप में रहे।

बेहद खुशी के साथ आपको सूचित किया जा रहा है कि आपके कार्यालय को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति वर्ष 1993-94 के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान करती है साथ ही वर्ष 1992-93 के लिए प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जायेगा।

दिनांक 4-8-95 को 11 बजे पटना डाक-तार मनोरंजन क्लब में आर ब्लॉक पटना में बिहार डाक सर्किल राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। कृपया इस आयोजन में पधार कर पुरस्कार प्राप्त करें।

शुभकामनाओं के साथ,

आपकी,
बी. के. भाटिया

(6)

पटना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय

बिहार, पटना-800 001

प्रमाणपत्र

महालेखाकार (ले० ह०) II, बिहार, पटना को राजभाषा हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु वर्ष 1992-93 का राजभाषा शील्ड प्रदान किया गया।

ए. के. चक्रवर्ती

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

एवं

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल बिहार

पटना-800 001

पटना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय

बिहार, पटना :-800001

प्रशस्ति पत्र

महालेखाकार (ले० ह०) II बिहार, पटना को वर्ष 1993-94 में राजभाषा हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

ए. के. चक्रवर्ती

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

एवं

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल बिहार

पटना-800001

(7)

दरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन एवं जी० ई०), बिहार, पटना

का

संदेश

हर्ष की बात है कि "चेतना" का सातवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इस पत्रिका ने हिन्दी के प्रति पाठकों का रुझान बढ़ाया है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

पत्रिका की सतत प्रगति होती रहे यही मैं चाहता हूँ।

स्वरूप नन्दक्योलयार

दरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन एवं जी० ई०),

बिहार, पटना

उप महालेखाकार (प्रशासन एवं निधि), बिहार, पटना

का

संदेश

हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि "चेतना" पत्रिका का सातवाँ अंक शीघ्र प्रकाशित होने वाला है। इस पत्रिका ने कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी के प्रति दिनानुदिन अभिरुचि बढ़ाने में प्रशंसनीय कार्य किए हैं। पत्रिका की सफलता के लिए पत्रिका के समस्त रचनाकार एवं सम्पादक मंडल धन्यवाद के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की अहिर्निश कामना करता हूँ।

पी० के० तिवारी

उप महालेखाकार (प्रशासन एवं निधि),

बिहार, पटना

सम्पादकीय

हिन्दी पत्रिका "चेतना" इस कार्यालय के राजभाषा-उद्यान का सातवां प्रस्फुटित पुष्प है। इसमें कितनी रंगीनी एवं खुशबू आ सकी है इसका निर्णय सुधी एवं सहृदय पाठक ही कर सकते हैं। वैसे अनवरत प्रयास किया गया है कि पत्रिका मनोहारिणी, उपयोगी, भावप्रद, ज्ञानवर्द्धक एवं संग्रहणीय हो। राजभाषा हिन्दी के सर्वांगीन विकास के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। इस पत्रिका ने भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के प्रचार एवं प्रसार में अपेक्षित सहयोग दिया है। अपने लेखा-कार्यालय के शुष्क एवं नीरस वातावरण में सरसता लाने का कार्य भी इस पत्रिका ने किया है। पत्रिका में निखार लाने एवं इसके कलेवर को अधिक से अधिक बढ़ाने में सतत प्रयास किया गया है।

इस पत्रिका के प्रत्येक अंक को भारतवर्ष के समस्त महालेखाकार-कार्यालयों एवं कुछ प्रसिद्ध केन्द्रीय कार्यालयों/उपक्रमों आदि में भेजा जाता है जहाँ से पत्रिका के विषय में पत्र आते हैं। इनमें से अधिकांश पत्र पत्रिका की प्रशंसा से संबंधित होते हैं जिनसे हमारा मनोबल बढ़ता है और हमें प्रोत्साहन मिलता है, साथ ही कुछ ऐसे भी पत्र होते हैं जिनमें बहुमूल्य सुझाव रहते हैं। फलतः पत्रिका के अगले अंक में त्रुटियों को दूर करने का हर संभव प्रयास किया जाता है। फिर भी यदि कुछ त्रुटियाँ रह जाएँ तो सहृदय पाठक हमें क्षमा करेंगे ! पत्रिका के संदर्भ में मुझे विज्ञ पाठकों के सुझाव की अपेक्षा है क्योंकि उनके सुझाव पत्रिका के विकास में सोपान का कार्य करेंगे।

इस पत्रिका का सौभाग्य है कि पत्रिका के प्रथम अंक से लेकर अबतक इस कार्यालय में जितने भी महालेखाकार आए हैं वे सब के सब हिन्दी प्रेमी रहे हैं। फलतः पत्रिका को उनलोगों का अपार स्नेह मिला है। पत्रिका के संरक्षक एवं वर्तमान महालेखाकार अहिन्दीभाषी होते हुए भी हिन्दी के प्रति पुर्णतः समर्पित हैं। अतः मैं इनके प्रति विशेष रूप से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। परामर्शदातृ समिति के सदस्यों के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ जिनके बहुमूल्य सुझाव/मार्गदर्शन से पत्रिका के प्रकाशन में बड़ी सहायता मिली है।

जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी रचना दी है मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

मैं "संपादक-मंडल के संयुक्त संपादक डॉ जितेन्द्र कुमार, अनुभाग अधिकारी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनकी कर्तव्यपरायणता एवं हिन्दी-निष्ठा ने इस पत्रिका को जीवन्त, ज्ञानवर्द्धक, रुचिकर एवं सौष्ठवपूर्ण बनाया है। हिन्दी कक्ष के बन्धुवर श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ लेखाकार एवं श्री दामोदर प्रसाद सिंह, लिपिक को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने हिन्दी कक्ष में रहकर हिन्दी की सेवा की है एवं पत्रिका के प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग दिया है। पटना स्थित सारे केन्द्रीय कार्यालयों में हमारे कार्यालय ने राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी में समस्त शासकीय कार्यों को निष्पादित करने में प्रथम स्थान प्राप्त कर राजभाषा चल शील्ड प्राप्त की है। इसके लिए कार्यालय के सारे अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं। अतः मैं इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

"जय भारत," "जय हिन्दी"।

सतीश चन्द्र सिन्हा

अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	रचना के प्रकार	रचयिता	पृष्ठ सं०
1.	चेतना परिवार			3
2.	महालेखाकार का संदेश			4
3.	श्रीमती बी० के० भाटिया		सचिव, पटना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का पत्र	5
4.	इस कार्यालय को मिली राजभाषा शील्ड के सम्बन्ध में प्रमाण-पत्र (वर्ष 1992-93 के लिए)			6
5.	इस कार्यालय को दिया गया प्रशस्ति पत्र (वर्ष 1993-94 के लिए)			6
6.	वरिष्ठ उप महालेखाकार का संदेश			7
7.	उप महालेखाकार का संदेश			7
8.	सम्पादकीय			8
9.	अनुक्रमणिका			10
10.	आपके पत्र			11
11.	वैष्णो देवी	लेख	डॉ० जितेन्द्र कुमार	13
12.	जिन्दगी कुछ आधी, कुछ अधूरी	कविता	सुश्री सुमन तिग्गा	19
13.	नाव और पत्थर	कविता	श्री नरेश प्रसाद	20
14.	आध्यात्म में विज्ञान का महत्व	लेख	श्री इन्द्रदेव सिंह	21
15.	शायद इसीलिए	कविता	श्री पियुष ओझा	23
16.	समय की अनुभूति स्मृति के सापेक्ष	कविता	श्री विजय कुमार सिन्हा	24
17.	साझेदारी ईश्वर से	लेख	श्री संजय कुमार	25
18.	मां के प्रति	कविता	श्री सत्येन्द्र कुमार सिन्हा	27
19.	आई० टी० ए० अनुभाग की कार्य-पद्धति एवं उसका महत्व	लेख	श्री सत्येन्द्र कुमार सिन्हा	28
20.	व्यांग्य कविता-ओलिम्पिक चैंपियन	कविता	श्री राजाराम गिरि	31
21.	प्रेमी-रूह की आवाज	कहानी	श्री हरिनारायण राय	32
22.	तिरंगा	कविता	श्री अशोक कुमार केशरी	33
23.	गजल	गजल	श्री शब्बीर हसन शब्बीर	34
24.	पेंशन नियंत्रण अनुभाग की अनुभूति	लेख	श्री सूर्य मोहन प्रसाद	35
25.	फिर भी कहते हो	कविता	श्री लक्ष्मी चौधरी	37
26.	अंतर्लेखा एवं हकदारी (पूर्वी क्षेत्र) कैरम प्रतियोगिता 1994 एक रिपोर्ट-रिपोर्ट		श्री आलोक कुमार	39
27.	एक ही रास्ता	लेख	श्री युगल किशोर झा	42
28.	राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए वर्ष 1995-96 के वार्षिक कार्यक्रम से उद्धृत अंश			47

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से महालेखाकार कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है। ये उनके (रचनाकारों के) निजी विचार हैं। साथ ही रचना की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार हैं।

—प्रधान सम्पादक

आपके-पत्र

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख एवं कविता सूचनात्मक, ज्ञानवर्द्धक तथा उपयोगी हैं। श्री एस. सी. सिन्हा का लेख “उदारता और कट्टरता का चक्र”, श्री एम. एन. हक का लेख “भ्रष्टाचार और निवारक सावधानियाँ”, श्री दयानन्द प्रसाद का लेख “भविष्य भारत का” तथा श्री चन्द्रिका सिंह की कविता “आत्मा और परमात्मा के बीच” विशेष रुचिकर लगा। मैं पत्रिका के रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

इलाहाबाद,
18-10-94

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/हिन्दी
महालेखाकार (लेखा परीक्षा)
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

हिन्दी पत्रिका “चेतना” का छठवां अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सभी लेख एवं कविताएँ काफी अच्छे हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ स्वीकार करें।

कलकत्ता,
24-10-1994

नित्य रंजन मण्डल,
लेखा परीक्षा अधिकारी
(अभिलेख/हिन्दी सेल)
महालेखाकार (लेखा परीक्षा) द्वितीय,
पश्चिम बंगाल, कलकत्ता

हिन्दी पत्रिका “चेतना” का छठवां अंक प्राप्त हुआ जिस हेतु बहुत बहुत धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट समस्त रचनाएँ ज्ञानवर्द्धक, भावप्रद तथा रोचक हैं। श्री इन्द्रदेव सिंह द्वारा लिखित “गायत्री मंत्र” की परिभाषा सराहनीय है। पत्रिका के सफल सम्पादन पर “चेतना” परिवार को हमारी ढेर सारी बधाइयाँ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना में,

नागपुर,
20-10-94

उप महालेखाकार/प्रशासन,
महालेखाकार (लेखा व हकदारी)—II,
महाराष्ट्र, नागपुर

हिन्दी पत्रिका "चेतना" के छठे अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद ।

अंक में समाविष्ट लेखा अभ्यास पूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक है, काव्य सुन्दर है । "उदारता और कट्टरता का चक्र" के लिए श्री एस. सी. सिन्हा को एवं "अभयारण्य-पक्षी विहार एवं राष्ट्रीय उद्यान" लेख के लिए डॉ. जितेन्द्र कुमार को धन्यवाद । "बेचारा प्रतिबन्धित लेखक" में रोचक व्यंग्य है ।

सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को धन्यवाद ।
पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना ।

राजकोट,
10/11/94

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
गुजरात, राजकोट—360 00 ।

हिन्दी पत्रिका "चेतना" का 6 वां अंक प्राप्त हुआ । पत्रिका में सारी रचनाएँ सार-गर्भित और प्रशंसनीय हैं ।

चेतना-परिवार की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए बधाइयाँ ।

बम्बई,
19-12-94

कल्याण अधिकारी/हिन्दी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) —1
महाराष्ट्र, बम्बई

पत्रिका "चेतना" का छठवां अंक मिला । एस. सी. सिन्हा का लेख "उदारता और कट्टरता का चक्र" अत्यन्त विचारोत्तेजक तथा ज्ञानवर्द्धक है । लेखक ने सभी धर्मों के परिप्रेक्ष्य में सही विश्लेषण प्रस्तुत किया है । "अभयारण्य पक्षी विहार एवं राष्ट्रीय उद्यान" तथा भ्रष्टाचार और निवारक सावधानियाँ भी सुरुचिपूर्ण लेख हैं । "गायत्री मंत्र" बहुत ही पसन्द आई । नरेन्द्र सिंह "नाहर" जगन्नाथ प्रसाद मेहता, तथा गिरिजा नन्दन की काव्य रचनाएँ प्रभावित करती हैं । "बेचारा प्रतिबन्धित लेखक" व्यंग्य रचना सार्थक बन पड़ी है ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना के साथ

चण्डीगढ़,
6-12-94

सहायक लेखा अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
पंजाब चण्डीगढ़—160 017

अंग्रेजी भाषा के प्रयोग से गुलामी की बू आती है, हिन्दी भाषा से आजादी का खुशबू आती है ।

—जय प्रकाश नारायण

22/10/95

“वैष्णो देवी की यात्रा”

लेखक :— डा० जितेन्द्र कुमार

एम० ए० (द्वय) पी-एच० डी०

अनुभाग अधिकारी, हिन्दी कक्ष

महालेखाकार (ले० एवं ह०) II, बिहार,

पटना का कार्यालय

बचपन से ही मुझे देशाटन के प्रति प्रबल इच्छा रही है किन्तु अर्थाभाव के कारण हमारी यह इच्छा पूरी नहीं हो पाती। मेरे मन की चाहें मन में ही सिसकती रह जाती हैं। बहुत दिनों से मुझे “वैष्णो देवी” जाने की इच्छा थी। मैंने लोगों के मुँह से “जय माता दी” का भक्तिपूर्ण वाक्य अनेक बार सुना। फलतः मुझे “वैष्णो देवी” के दर्शन की उत्कट इच्छा हुई। तुरीयावस्था में पहुँच जाने के कारण मेरी यह इच्छा सर्वथा युक्ति-संगत ही मानी जाएगी।

भाग्यवश छुट्टी यात्रा रियायत (एल० टी० सी०) के “ब्लॉक इयर 1990-93” का “ग्रेस पिरियड” 30.6.95 तक बढ़ाया गया। मैंने उक्त “एल० टी० सी०” में सपरिवार “वैष्णो देवी” जाने का कार्यक्रम बनाया। संयोग से मुझे इसके लिए कार्यालय से अग्रिम की पर्याप्त राशि मिल गई। अंधा क्या मांगे ? दो आँखें। मुझे राशि मिली और मैंने झटपट “वैष्णो देवी” की यात्रा का कार्यक्रम बनाया।

मैंने सपरिवार “राजधानी एक्सप्रेस” से दिनांक 1-6-95 की रात नौ बजे पटना जं० से नयी दिल्ली के लिए प्रस्थान किया क्योंकि नयी दिल्ली होकर हमलोगों को जम्मू-तवी तक का आरक्षण “राजधानी एक्सप्रेस” से “3 टायर वातानुकूलित डब्बे” में मिला था। रात के घने अंधकार को चीरती हुई हमारी “राजधानी एक्सप्रेस” पटने से नयी दिल्ली के लिए रवाना हुई। रेलगाड़ी बड़ी द्रुतगामी गति से चल पड़ी। “राजधानी एक्सप्रेस” में रेल विभाग की ओर से यात्रियों के लिए भाँति-भाँति के सुस्वादु भोजन का प्रबन्ध था। डब्बे में बैठते ही हमलोगों को “टमाटर-सूप” दिया गया। रात दस बजे नाना प्रकार की स्वादिष्ट खाद्य सामग्री से सुसज्जित थालें हम-लोगों के सामने रखी गईं। हमलोगों ने झटपट खाना शुरू किया। आखिर थालों के साथ तं न्याय करना ही था। पीने के लिए प्रत्येक यात्री को पानी से भरे एक-एक मिनरल वाटर के बोतल दिए गए जिसकी कीमत बाजार में 12/- रु० प्रति बोतल है। शाकाहारियों एवं मांसाहारियों के लिए भोजन के अलग-अलग प्रबन्ध थे। खाना खाने के बाद सभी यात्रियों को प्लास्टिक की एक-एक बड़ी कटोरी में आईसक्रीम दी गई। सभी इसे खाकर पूर्णतः तृप्त हो गए। सोने के पूर्व प्रत्येक यात्री को रेल विभाग की ओर से चादर, कम्बल, तकिया, तौलिया आदि दिए गए जिन्हें यात्रा के समापन के बाद लौटा दिए गए। वातानुकूलित डब्बे में हमलोग उस रात गर्मी के मौसम होने पर भी ठंड से काँप रहे थे। डब्बे के कण्डक्टर को हवा धीमी करने के लिए आग्रह किया गया। तदनन्तर हमलोग चादर ओढ़कर सो गए। सुबह उठे तो हमलोगों को भरपूर नाश्ता एवं चाय दी गई। यात्रा-समापन के पूर्व हम सबों को “गोल्ड स्पॉट” भी पिलाया गया।

हमलोग 2-6-95 को सुबह 10.15 में नयी दिल्ली पहुँचे । यों तो दिल्ली में हमारे कई सम्बन्धी हैं किन्तु हमने अपने साले के निवास-स्थान में ही डेरा डालना उचित समझा ।

हमलोग 2-6-95 के दोपहर से 7.6.95 की संध्या तक दिल्ली के विभिन्न स्थानों की सैर करते रहे । कभी चाँदनी चौक बाजार में तो कभी पालिका बाजार में चक्कर काटते, कभी लोटस मन्दिर जाते तो कभी बिड़ला मन्दिर ।

7-6-95 की रात 8.20 में हमलोगों ने “राजधानी एक्सप्रेस” से “हजरत निजामुद्दीन” रेलवे स्टेशन से “जम्मू तवी” के लिए प्रस्थान किया । इस “राजधानी एक्सप्रेस” में भोजन का कोई प्रबंध नहीं था । प्रत्येक यात्री के पीने के लिए एक-एक मिनरल बोतल पानी दिया गया । सोने के पूर्व रेल विभाग की ओर से हमलोगों को चादर, कम्बल, तौलिया और तकिया दिए गए । हमलोग 8-6-95 के प्रातः छः बजे “जम्मू तवी” पहुँच गए । वहाँ से “कटरा” जाना था । “जम्मू तवी” से “कटरा” तक की 52 किलोमीटर की यात्रा सड़क से करनी पड़ती है । हमलोग कुछ घंटे तक “जम्मू तवी” रेलवे स्टेशन के निकट ठहरे । तदनन्तर प्राइवेट बस से अढ़ाई घंटे में “जम्मू तवी” से “कटरा” लगभग साढ़े ग्यारह बजे दोपहर पहुँचे ।

“वैष्णो देवी” की यात्रा में विभिन्न प्रकार के वाहनों के लिए “कटरा” आखिरी पड़ाव है । वह वैष्णो देवी की यात्रा के एक महत्वशाली केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है । देश-विदेश से आए तीर्थ-यात्रियों के आने-जाने से यहाँ रात-दिन चहल-पहल रहती है । यात्रियों के ठहरने के लिए होटल एवं यात्री-निवास आदि हैं । सम्पन्न यात्रियों के लिए यहाँ 3 सितारा दर्जे के कई अच्छे विशाल होटल भी हैं । यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिए पर्यटन विभाग की ओर से भी प्रबंध किए गए हैं । यहाँ अनेक धर्मशालाएँ हैं । कुछ धर्मशालाएँ मुफ्त सेवा करती हैं तो कुछ में दानपात्र का शुल्क लेकर यात्रियों को ठहरने की अनुमति दी जाती है । यहाँ का बाजार बड़ा ही लुभावना है । जरूरत की सारी चीजें यहाँ उपलब्ध हैं ।

“कटरा” में हमलोग “पंडित जी यात्री निवास” में ठहरे । यहाँ बिजली, पानी आदि हर प्रकार की अच्छी सुविधाएँ थीं ।

“कटरा” से “दरबार” (वैष्णो देवी के मन्दिर तक) 14½ किलोमीटर की दूरी है । “कटरा” से “वाणगंगा” लगभग डेढ़ किलोमीटर है और वहाँ से दरबार तक 13 किलोमीटर की यात्रा पैदल या घोड़े आदि पर करनी पड़ती है । “वाणगंगा” से आगे दरबार तक चढ़ाई वाले रास्ते हैं जो दो प्रकार के हैं । इनमें से एक सीढ़ियों का रास्ता है और दूसरा पैदल चलते हुए “भवन (वैष्णो देवी के मन्दिर) की ओर चढ़ते जाने का । सीढ़ियों के रास्ते चढ़ने का कार्य बहुत थका देने वाला है किन्तु इस रास्ते से दूरी कम पड़ती है, फिर भी इसमें समय अधिक लगता है । पैदल चलने का रास्ता थोड़ा लम्बा अवश्य है लेकिन उससे चढ़ाई करना अपेक्षाकृत सरल है और इसमें समय भी कम लगता है । इस पूरे रास्ते को दस लाख टाइलों से तैयार किया गया है । यात्रियों के सुरक्षा हेतु रास्ते के किनारे जगह-जगह अवरोधक दीवारें बनाई गई हैं जिनकी कुल लम्बाई लगभग 5 हजार फीट है । दो हजार मीटर लम्बाई में रेलिंग लगाई गई हैं । रास्ते में जो कुछ जगह बची है, वहाँ सुन्दर एवं चित्ताकर्षक उद्यान बना दिए गए हैं । यात्रियों के विश्राम के लिए रास्ते में अनेक “शेड” बनाए गए

हैं और बहुत सारे अल्पाहार स्टाल भी खोले गए हैं जहाँ नाश्ते की चीजें उचित मूल्य पर मिलती हैं। सम्पूर्ण रास्ते में पेय जल एवं शौचालय का उत्तम प्रबन्ध है।

प्रत्येक यात्री के लिए यह आवश्यक है कि वह कटरा में "बस टर्मिनल" पर मिलने वाली यात्रा की पर्ची प्राप्त कर लें और सीधी चढ़ाई में घुमावदार संकीर्ण रास्ते पर सहारे के लिए एक छड़ी या लाठी भी खरीद लें जो कटरा की अनेक दुकानों में मिलती है। भवन (वैष्णो देवी के मन्दिर) के निकट तक जाने के लिए घोड़े, खच्चर एवं पालकी भी सरकार द्वारा निर्धारित दर पर मिलती हैं किन्तु हमलोगों ने पैदल ही चढ़ाई का निर्णय लिया। छोटे बच्चे जो न पैदल चल सकते हैं और न घोड़े या खच्चर पर चढ़कर जा सकते हैं उन्हें खास तौर से बनाई गई टोकरियों में रखकर ले जाये जाते हैं। उन टोकरियों को उठाने वाले को "पिटठू" कहते हैं। वे टोकरियाँ उनकी पीठ पर लटकी रहती हैं। "पिटठू" का भाड़ा भी सरकार द्वारा निर्धारित है।

शुक्रवार 8-6-95 की रात सात बजे "कटरा" से हमलोगों ने वैष्णो देवी के दर्शन के लिए प्रस्थान किया। बस टर्मिनल पर हमलोगों ने यात्रा की पर्चियाँ ले लीं और रिक्शे से "बाणगंगा" तक आए। बाणगंगा का धार्मिक महत्व है। जब श्रद्धालु लाँगुर को चलते-चलते प्यास लगी तो कन्या रूपी महाशक्ति देवी ने पत्थरों से बाण मार कर गंगा प्रवाहित कर दी और अपने वीर की प्यास को तृप्त किया और उसी गंगा में ही देवी ने अपने केश संवारे, इसलिए इसे "बाण गंगा" भी कहते हैं।

"बाण गंगा" से हमलोगों ने पैदल चलने वाले घुमावदार रास्ते से चढ़ाई शुरू की क्योंकि सीढ़ियों वाले रास्ते थकान पैदा करने वाले थे। इसी रास्ते से घोड़े, खच्चर आदि भी जाते हैं। "जय माता दी" "शेरा वाली तेरी सदा ही जय", "ज्योता वाली माता तेरी सदा ही जय" आदि के नारे लगाते हुए हमलोगों ने चढ़ाई शुरू की। हमलोगों के अन्दर जोश था, उत्साह था। हमलोगों का जोश-खरोश तो यह देखकर और भी बढ़ गया। जब हमलोगों ने विकलांगों को "वैष्णो देवी" के दर्शन के लिए जाते हुए देखा। अन्धे एवं लंगड़े भी "जय माता दी" कहते हुए जा रहे थे। उनके चेहरे पर जरा भी शिकन नहीं थी। कुछ ऐसे भी व्यक्ति देवी के दर्शनार्थ जा रहे थे जिनके दोनों पैर कटे थे और दो वैशाखियों के द्वारा शिखर पर अनवरत चढ़ते देख पड़े। सच पूछिए तो मैं कहना चाहूँगा कि माँ वैष्णो देवी के प्रति आस्था ले जाती है उनका हाथ थामकर। तुलसीदास जी की पंक्ति याद आ पड़ी :—“मूक होई वाचाल, पंगु चढ़हि गिरिवर गहन”। हमलोगों की यह बड़ी ही मजेदार यात्रा थी। रात्रि का समय था। फलतः यात्रा और सुखद हो गई। चारों ओर सोडियम लाइट की व्यवस्था थी। तीर्थ यात्रा के लिए ऐसा उत्तम प्रबन्ध भारत में कहीं देखने को नहीं मिला। नेत्रों के सम्मुख अनवरत आते मोहक दृश्य और हरियाली से भी हुई उन्नत पर्वत श्रृंखलाएँ यात्रियों को आकृष्ट कर रही थीं। हमलोगों की दृष्टि सुदूर फैली घाटियों पर थी। एक ओर दूर आँखों से ओझल हो रहा था "कटरा" और दूसरी ओर हमलोग खड़े थे आसमान से होड़ लगा रहे उन्नत पर्वत पर। यात्रियों के अन्दर परस्पर प्रगाढ़ प्रेम को देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो हमलोग स्वर्ग में आ गए हों। हमलोगों ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि वैष्णो देवी की यात्रा इतनी रोचक एवं अविस्मरणीय होगी। पहले की भाँति कोई कठिनाई इस यात्रा में अब नहीं है। यहां के धूल-कणों, चट्टानों, पापाण-खण्डों, लताओं, वृक्षों आदि ने हमलोगों के फरियाद को सुना और आज हमारा सौभाग्य है कि दो तरह के मार्ग (सीढ़ी वाला और घुमावदार) भवन (वैष्णो देवी के मन्दिर) तक बन गए। विजली के चित्ताकर्षक प्रकाश और संचार-व्यवस्था ने यात्रा के आनन्द को कई गुणा बढ़ा दिया।

अन्य तीर्थ-स्थलों की भांति यहाँ पर भीखमंगे कहीं भी नहीं दीख पड़े, साथ ही कहीं भी ऐसे पंडे नहीं दीख पड़े जो अन्य तीर्थ-स्थलों की तरह तीर्थ-यात्रियों से पैसे गँठ रहे हों अर्थात् सम्पूर्ण वैष्णो देवी यात्रा में भीखमंगी और पंडागिरी नहीं दीख पड़ी जो यहाँ की यात्रा की बहुत बड़ी विशेषता है। इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, थोड़ी है। वैष्णो देवी की इस पवित्र यात्रा में चढ़ाई के समय हमलोगों की एक ही लगन थी कि कब दरवार में पहुँचें और माता वैष्णो देवी के दर्शन करें।

चढ़ाई के समय हमलोग रुक-रुक कर कई जगह कुछ क्षणों के लिए विश्राम भी करते थे। राह में हमलोग कई स्थानों में फल का जूस भी पीते गए और कहीं-कहीं जलपान भी करते गए।

“बाणगंगा” के बाद “चरण-पादुका” का स्थान आया। इस स्थान पर रुक कर महाशक्ति देवी ने पीछे की ओर देखा था कि भैरव जोगी आ रहा है या नहीं। रुकने से उस स्थान पर माता के चरण-चिन्ह बन गए, इसी कारण इस स्थान को “चरण पादुका” कहा जाता है। यह स्थान समुद्रतल से 3380 फीट की ऊँचाई पर है।

हमलोग भजन-कीर्तन करते हुए आगे चढ़ाई की ओर बढ़ते गए। “चरण पादुका” से लगभग साढ़े तीन किलोमीटर दूर “आदि कुमारी” का स्थान है। वैष्णो देवी की यात्रा में यह स्थान लगभग आधे रास्ते पर है। इस स्थान के निकट एक गुफा है। इसे “गर्भयोनि गुफा” कहते हैं। इसे आज भी “गर्भजून-गुफा” कहा जाता है। यहाँ वैष्णवी कन्या ने नौ महीने तक तपस्या की। जिस प्रकार कोई शिशु माता के गर्भ में रहता है, उसी प्रकार माता इस गुफा में रहीं। जब वैष्णवी कन्या को खोजता हुआ भैरव उस गुफा के निकट आया तो उसने पास बैठे तपस्वी से उस कन्या की जिज्ञासा की। तपस्वी ने उसे बताया—“जिसे तू साधारण कन्या समझता है वह तो महाशक्ति है और आदि कुमारी है। भैरव हठ करके गुफा में घुसा तो गुफा में बैठी देवी ने अपने त्रिशूल के प्रहार से गुफा के पीछे मार्ग बनाया और बाहर निकल गई। यहाँ भगवती वैष्णो देवी का “आदिकुमारी” नाम से मन्दिर है।

हमलोग आगे बढ़ते गए। तदनन्तर “हाथी मत्था” नामक स्थान आया। यह सबसे कठिन चढ़ाई मानी जाती है। “आदिकुमारी” से पहाड़ की चढ़ाई हाथी के माथे जैसी सीधी खड़ी हो जाती है। शिखर को “हाथी मत्था” कहा जाता है। समुद्र तल से “हाथी मत्था” की ऊँचाई 6500 फीट के लगभग है। आदिकुमारी से 2.5 किलोमीटर है। “हाथी मत्था” से दो किलोमीटर के सीधे मार्ग पर “साँझी छत” नामक स्थान आया। यह समुद्रतल से लगभग 7200 फीट है।

यहाँ से भैरव मन्दिर के लिए छोटा रास्ता जाता है। सामान्यतः यात्री “हाथी मत्था” से “साँझी छत” की ओर न जाकर नये रास्ते से दिल्ली वाली छबील से होकर दरवार की ओर जाते हैं क्योंकि भैरव मन्दिर के दर्शनों का विधान लौटती बार है। इस प्रकार यात्रियों को दो किलोमीटर कम चलना पड़ता है।

दरवार पहुँचने के पूर्व लगभग 2½ किलोमीटर ढालुआँ रास्ता है। जिससे वैष्णो देवी के मन्दिर तक पहुँचने में हमलोगों को बड़ी सुविधा हुई।

9-6-95 के प्रातः सात बजे हमलोग 'त्रिकूट' पर्वत पर स्थित माता वैष्णो देवी के दरबार के निकट पहुँचे। समुद्र-तल से दरबार 5200 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। दरबार पहुँचने के पूर्व हमलोगों को अपना नाम लिखवा कर टोकन लेना पड़ा जिस पर यात्री-संख्या लिखानी पड़ी। यह टोकन कटरा से प्राप्त यात्री-पर्ची देखकर दिया गया। पवित्र गुफा में प्रवेश करते समय इसी यात्री-संख्या के आधार पर माँ वैष्णो देवी के दर्शन की अनुमति दी जाती है। हमलोग टोकन की यात्री-संख्या के अनुसार पंक्ति में खड़े हुए और लगभग साढ़े ग्यारह बजे दोपहर में माँ वैष्णो देवी के मन्दिर की ओर जाने की अनुमति मिली। हमलोग धीरे-धीरे पंक्ति में बढ़ते गए और हमलोगों ने दोपहर लगभग बारह बजे पवित्र गुफा में प्रवेश किया। गुफा में प्रवेश करने के पूर्व हमलोगों ने मन्दिर के पुजारी के हाथों में प्रसाद के रूप में चढ़ाने के लिए नारियल दिए। देवी दर्शन के बाद चढ़ाए हुए नारियल हमलोगों को पुजारी द्वारा लौटा दिए गए जिन्हें हमलोगों ने प्रसाद स्वरूप ग्रहण किए। पवित्र गुफा के अन्दर चमड़े की वस्तु आदि ले जाना वर्जित है। बहुत पहले पवित्र गुफा की ऊँचाई बहुत कम थी अतः भक्तों को झुक कर गुफा के अन्दर प्रवेश करना पड़ता था। कुछ देर झुक कर चलना पड़ता था और माँ वैष्णो देवी का दर्शन करना पड़ता था। प्रवेश द्वार छोटा होने से यात्रियों को दर्शन करने के पश्चात् वापस आने में बहुत समय लगता था जिससे अन्य यात्रियों को देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी तथा बहुत कम संख्या में ही लोग दर्शन कर पाते थे। अब नई गुफा बनाकर इस कष्ट को दूर कर दिया गया अब भक्तों को अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती है तथा अधिक से अधिक यात्री दर्शन कर पाते हैं। प्रवेश द्वार को चौड़ा किया गया और ऊँचाई बढ़ायी गयी। नई गुफा का उद्घाटन डॉ० कर्ण सिंह द्वारा 20-3-77 को हुआ। गुफा की लम्बाई 39.61 मीटर, चौड़ाई 1.82 मीटर तथा ऊँचाई 2.21 मीटर है। गुफा के अन्दर विद्युत प्रकाश का अच्छा प्रबन्ध है। गुफा के अन्त में भगवती वैष्णो माँ के दर्शन तीन भव्य पिण्डियों के रूप में किए जाते हैं :— महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती। कुछ लोग इन तीन पिण्डियों में मध्य वाली को माता "वैष्णो देवी" भी कहते हैं। जैसे ब्रह्मा, विष्णु और शिव एक ही ब्रह्मा के भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं और तीन नामों से भिन्न-भिन्न काम करते हैं। ठीक उसी तरह महासरस्वती, महालक्ष्मी एवं महाकाली—ये तीन पिण्डियाँ (विकृतियाँ) एक ही "आदिशक्ति" के भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं और तीन नामों से भिन्न-भिन्न काम करती हैं। ऊपर से भिन्न-भिन्न दिखाई देने पर भी इन तीन पिण्डियों में कोई भेद नहीं है। इन पिण्डियों के पास माता की अखण्ड ज्योति प्रज्वलित रहती है। हमलोगों ने माँ वैष्णो देवी के दर्शन किए। उनके दर्शन से हमलोगों ने आत्मिक सुख का अनुभव किया। हमलोग दर्शन कर नई गुफा के रास्ते वापस लौटे। गुफा के अन्दर थोड़ी दूर तक झुक कर निकलना पड़ा। लौटते समय माँ के मन्दिर के नीचे मन्दिर कमिटी द्वारा हमलोगों को दूध का शरबत पिलाया गया। माँ वैष्णो देवी का दर्शन कर हमलोगों ने 9-6-95 की संध्या चार बजे "वैष्णो देवी" से "कटरा" के लिए प्रस्थान किया। वापसी यात्रा में समय कम लगा और हमलोग 10-6-95 की रात एक बजे (1.00 A.M.) कटरा वापस आ गए। वापसी यात्रा कष्टदायक नहीं थी क्योंकि वापसी में रास्ता ढालुआँ था।

वैष्णो देवी की महिमा अपरंपार है। वे कष्ट को दूर करने वाली हैं। दुखियों के दुःख हरने वाली हैं। अपने भक्तों की मनोकामना को पूर्ण करने वाली हैं। माँ शेरों वाली का द्वार भक्तों एवं श्रद्धालुओं के लिए सदा खुला रहता है। सच्चे हृदय से भक्ति करने वाले भक्तों के सम्मुख माँ वैष्णो देवी सदा खुशियाँ बिखेरती हैं। पुस्तक संसार, जम्मू द्वारा प्रकाशित "माता वैष्णो-देवी" पुस्तक की पृष्ठ संख्या 181 में महामाया वैष्णो-शक्ति की स्तुति में निम्नलिखित श्लोक की चर्चा है:—

"त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीयां
 विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
 सम्मोहित देवि समस्तमेतत्
 त्वं वे प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥
 विद्या समस्तास्तव देवि भेदाः
 स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ॥
 त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
 का ते स्तुतिः सत्वयपरा परोक्तिः ।

"तुम अनन्त बल सम्पन्न अर्थात् वैष्णवी शक्ति हो । इस विश्व की वारणभूता परामाया हो । देवि ! तुमने इस समस्त जगत् को मोहित कर रखा है । तुम्हीं प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो । देवि ! सम्पूर्ण विद्याएँ तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं । जगत् में जितनी स्त्रियाँ हैं, वे सब तुम्हारी ही भूक्तियाँ हैं । जगदम्बे ! एकमात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है । तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है । तुम तो स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे एवं परावाणी हो ।"

माँ वैष्णो देवी के दर्शन के बाद वापसी यात्रा में "भैरव मन्दिर" जाने का विधान है । माता के दरबार से लगभग आधा किलोमीटर आगे चलकर "भैरव मन्दिर" के लिए सीढ़ियाँ और पगदण्डी दोनों रास्ते हैं । जिस जगह भैरव का सिर गिरा था उसी जगह भैरव मन्दिर बनाया गया । माता के दरबार से दूरी अढ़ाई किलोमीटर तथा समुद्रतल से लगभग 6700 फीट ऊँचाई है ।

हमलोग माँ वैष्णो देवी का दर्शन कर कटरा से जम्मू-तवी आए और वहाँ से पटना वापस आए । वैष्णो देवी की यात्रा हमेशा याद रहेगी । यदि माँ वैष्णो देवी ने हमलोगों को पुनः बुलाया तो हमलोग पुनः उनके पवित्र दर्शन हेतु जाएंगे ।

राष्ट्र से उँचा कोई व्यक्ति या धर्म नहीं हो सकता ।

—पं० दीनदयाल उपाध्याय

हिन्दी अब सारे भारत की राष्ट्रभाषा बन गई है, हमें इस पर गर्व होना चाहिए । मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं कह सकता ।

—आचार्य बिनोवा भावे

जिंदगी कुछ आधी, कुछ अधूरी

● कवयित्री—सुधी सुमन तिग्गा,
वरिष्ठ लेखाकार

सफेद कागज पर पानी से
कुछ लिखा है मैं ने—
बचपन जो पीछे छूट गया
इक मोड़ जो कहीं इसी रास्ते पर छूटा
मुड़कर जिधर से कदम
मंजिल तक पहुँच जाते
मुद्दत हो चली है, तलाश में लेकिन
ऐसी एक राह भी नहीं
जो लौट कर बचपन के मोड़ तक जाती हो ।
एक गीत जिसकी धुन याद नहीं
एक राह जो कहीं भी जाती न हो
एक किताब जिसका शीर्षक नहीं है
एक सफर जिसकी कोई मंजिल, मकसद
न मुसाफिर ही कोई
एक कविता जो कभी लिखी न गई
एक अंधेरा जो उजाले से कोसों दूर हो
यूँ ही कुछ आधी, कुछ अधूरी सी हैं
जिंदगी भी
नादान था कोई जो मुझसे
पूछ रहा था जिंदगी का माने

रोटी

तुम्हीं से शुरू, तुम्हीं से खत्म
हर नज्म, सभी की,
तुम ख्यालों से दूर जाओ, तो कोई कुछ सोचे, कुछ लिखे ।

जिंदगी का डर

कब, क्या पता, कहाँ से, कितनी बार,
मारेगी जिंदगी ।
बस कि जिंदगी से डरते हैं,
मौत का क्या, वह तो एक बार मारेगी ।

नाव और पत्थर

● श्री नरेश प्रसाद,
अनुभाग अधिकारी

डूबे रहे पत्थर ने पूछा, सरिता से रो रोकर,
मुझे डूबा अगम नीर में, क्यों तू निर्दय होकर ।
किन्तु नाव को तैराता है, भेद भाव क्यों इतना,
नहीं जानता नाव और मुझमें अन्तर है कितना ॥

सुना तभी सरि ने बोला धीरे-धीरे मुस्काकर,
इठलाकर, इतराकर और जरा बलखाकर ।
जो औरों को पार लगाये क्यों उसका पार लगे ना,
परमार्थ के कार्य लगे जो उसका भला हो क्यों ना ।

भारत फूलों का एक गुलदस्ता है, जिसमें से सभी धर्मों की
खुशबू आती है ।

—इक्वाल

हिन्दी हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा है, प्रयास यह होना चाहिए
कि हिन्दी विश्व की भाषा बन जाए ।

—विश्व हिन्दी परिषद्

“आध्यात्म में विज्ञान का महत्व”

● श्री इन्द्रदेव सिंह
वरिष्ठ लेखाकार

आध्यात्म एवं विज्ञान का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। इस आशय को निम्नलिखित वातावरण में धारण किया जाना न्यायोचित होगा। आध्यात्म के क्षेत्र में ईश उपासना का सर्वोच्च स्थान है। इस निबन्ध में उपासना का योग शरीर विज्ञान से संतुलित करने का प्रयास किया गया है।

ईश्वर की उपासना से उपासक की क्षमताओं, शक्तियों और सामर्थ्य में अनुपम वृद्धि होती है जो अपनी चेतनशक्ति तथा भौतिक गुणों से उसे लाभान्वित करती रहती है। ईश्वर की उपासना का वैज्ञानिक आधार है जिसे सही अर्थों में सम्पन्न करने पर शारीरिक और मानसिक लक्षण में परिवर्तन परिलक्षित होते हैं।

नक्षत्रीय गतिविधियाँ मनुष्य को शारीरिक और मानसिक गतिविधियों को प्रभावित करती हैं। पर कैसे मनुष्य के शरीर में उपस्थित कोषिकाओं में अनुकूल तत्वों को आकर्षित करने तथा अवशोषण कर अपने आप में धारण करने की अपूर्व शक्ति होती है। इस आधार पर शरीर से टूटने वाली उर्जा की कमी को पूरा करने की शक्ति कोशिकाओं में सुनिश्चित सामर्थ्य विद्यमान है। मस्तिष्क में जो भी भाव तरंग उठती हैं उनका प्रभाव सीधे शरीर के अणुओं तथा कोशिकाओं पर पड़ता है जिसके प्रभाव से मनुष्य ब्रह्माण्ड (आकाश) की अदृश्य शक्तियों से प्रभावित होती हैं तथा अपने मन की चुम्बकीय शक्ति से दूर स्थित नक्षत्र पिण्डों से शक्ति प्रवाह अपने अन्दर धारण करता है और इस प्रकार अंतरंग क्षमताओं को विकसित कर सकता है। फलस्वरूप वह अपनी कार्यक्षमताओं को विकसित कर भौतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति उपलब्ध करता है। यह मानव जीवन की सर्वोच्च शक्ति है।

उपासना की निरन्तर अभ्यास से शारीरिक परिवर्तन होते हैं। उपासना की अवस्था में तल्लीन रहने पर कम आक्सीजन में भी शरीर का काम चलता है। फलतः हृदय और नाड़ियों की गति मन्द पड़ने से रक्तशोधन होकर उसके विकास कम हो जाते हैं। इससे शरीर में ताजगी उत्पन्न होती है। विज्ञान का नियम है कि प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ में उत्सर्जन की क्रिया होती है। इसी प्रकार मानव शरीर में भी विकिरण क्रिया होने के कारण शक्तिक्षरण होता है। परन्तु उपासना की अवस्था में विकीर्ण होने वाली तरंगों के गुणों में परिवर्तन के कारण शरीर में विषशोधन एवं नई संरचना होने लगती है। प्रगाढ़तम उपासना मानव की मनश्चेतना को सूर्य के गुणों से भरपूर सुसज्जित कर देती है।

मानव के मन में असंतोष, उदासी, व्यथा, तनाव, निराशा, विबादि मरणात्मक दबाव हैं जिससे पिट्यूटरी ग्रन्थि से निकलने वाले एस० टी० एच० हार्मोन्स शरीर में व्यग्रता, अधीरता और बेचैनी को बढ़ा देते हैं जिससे आँतों में घाव हो जाता है और पाचन सम्बन्धी अनेक प्रकार के रोग व्याभि विकसित होने लगते हैं। इसका प्रतिकार उपासना है।

जब उपासक गहरे ध्यान में तल्लीन रहता है उसी अवधि में पिट्यूटरी नामक ग्रन्थि (Gland) से बारह प्रकार के हॉर्मोन्स स्रावित होते हैं जो शरीर को संयुक्त रूप से स्वरुध एवं संतुलित बनाने में सक्रिय होते हैं। उपासना-साधना रक्तचाप को नियंत्रित करने में अभूतपूर्व भूमिका निभाती हैं, यदि सुनिश्चित विधि से सम्पन्न किया जाय।

इसी प्रकार उपासना-साधना द्वारा अनेक प्रकार के शारीरिक कष्टों से बचाव किया जा सकता है। मनुष्य एक संवेदनशील एवं भावनात्मक प्राणी है। ऐसी अवधि में उत्तेजना आने की अवस्था में तनाव पैदा होता है। पलस्वरूप पिट्यूटरी तथा एड्रिनल ग्रन्थियों द्वारा सोमोटो ट्रिमिक तथा डेबसाइकोर्टि कोस्टोरेन दो प्रकार के हॉर्मोन्स का स्राव होता है जिसके कारण सिरदर्द, उच्च रक्त चाप, पेप्टिक अल्सर आदि अनेक प्रकार के उपद्रव उत्पन्न होते हैं। मानसिक जप एवं उपासना की अवस्था में उपर्युक्त रसों का स्राव बन्द हो जाता है और उपासक स्फूर्ति एवं स्वस्थता का अनुभव करता है। दूसरे शब्दों में ईश्वर-उपासना से धनात्मक शक्ति उत्पन्न होती है जिससे मानव शरीर में आत्म विश्वास, आत्मगौरव और आत्मबल में वृद्धि होती है। इस अभ्यास से मानव अनेकानेक आधिव्याधियों से अपने आप को मुक्त कर सकता है। सुखद एवं सच्चे जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकता है।



विदेशी भाषा से कहीं अच्छी, अपने देश की कोई भाषा है, जो राष्ट्रीयता की याद दिलाती है।

—पं० दीनदयाल उपाध्याय

अंग्रेजी दासता की भाषा है, स्वतंत्रता का सही मूल्यांकन तब होगा जब इसे छोड़ हिन्दी को अपना लेंगे।

—पं० म० मो० मालवीय

“शायद इसीलिए”

● पियुष ओझा
लेखाकार

“प्यार” के दाम अब “आसमान” को छू रहे हैं ।
लोग “सस्ती” “नफरत” को,
दिलों में भर-भर के जी रहे हैं, “शायद इसीलिए” ।
मुफ्त में अब “मौत” भी मिलती नहीं,
लोग मर-मर के भी जी रहे हैं शायद इसीलिए ।
“पीयुष” अब सबको पीने मिलता नहीं ।
लोग “विष” को ही,
प्यालों में भर-भर के पी रहे हैं शायद इसीलिए ।
“शराफत” अब सेहत को और भी गिराती है ।
लोग इसे छोड़, “सिगरेट” पी रहे हैं शायद इसीलिए ।
“ईमानदारी” बीमारी “छूत” की हो गई है ।
लोग इससे बचने, इसके “टीके” ढूँढ़ रहे हैं शायद इसीलिए ।
“दौलत” के एक ही “डिपार्टमेंटल स्टोर” में,
“फिक्सड प्राईज” में यहाँ,
सत्य-अहिंसा, दया-धर्म-पुण्य सब एक साथ बिक रहे हैं, शायद इसीलिए ।
“खुशियों” से डर गए हैं अब सारे गरीब,
वे आते ही नहीं इसके करीब,
बस “दूर-दर्शन” में ही कर लेते हैं इसके दर्शन, शायद इसीलिए ।



समय की अनुभूति स्मृति के सापेक्ष

● श्री विजय कुमार सिन्हा
वरिष्ठ लेखाकार, प्रशासन—III

समय की अनुभूति
स्मृति के सापेक्ष

समय की स्वरित गतिमानता
एक अनुभूति, एक संवेदन
हर साए के खिसकते -
सरसराहट के रूप में
और मन की गहराइयों में
तलहठी पर बैठी
स्मृतियों के श्वेत कण
बुलबुलों की भाँति
उभरते — बनते — भिटते
अपने परितः लाओक—
बिखेरने में प्रयत्नशील
शायद उनके पहलू में जली
अतीत की लौः
आगने वाले कल को—
प्रकाशमान करे
जीवन के
एक नए दृष्टिकोण
एक नए दर्शन
एक नए आशावाद
के साथ ।



साझेदारी ईश्वर से

● श्री संजय कुमार
लिपिक

भारतीय साझेदारी विधान (Indian Partnership Act) सन् 1932 के अनुसार साझेदारी की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है—“साझेदारी वैसे सम्बन्ध को कहते हैं, जिसके अनुसार दो या अधिक व्यक्ति किसी ऐसे व्यापार के लाभ या हानि को आपस में बाँटना स्वीकार करते हैं जो उनमें से सभी या किसी भी व्यक्ति द्वारा सभी के लिए किया जाता है।”

मित्रों : ऐसी साझेदारी प्रायः सभी जगह देखने को मिल जाती है जैसे-बैंकिंग व्यवसाय, कम्पनी व्यवसाय, या साधारण साझेदारी, परन्तु मैं आज एक ऐसी साझेदारी पर विचार करना चाहता हूँ जहाँ हानि की लेश-मात्र भी सम्भावना नहीं हो और यदि कुछ हो तो वह हो सिर्फ लाभ ही लाभ। यह है-साझेदारी ईश्वर से, जिसे हमारे द्वारा ईश्वर से किया जाएगा एवं ईश्वर के लिए किया जाना चाहिए। यहाँ यह जान लेना आवश्यक होगा कि ईश्वर कहते किसको हैं। (ईश्वर पर विचार करने से पूर्व मैं यह स्पष्ट कर देना चाहूँगा कि मैं एक नादान इंसान ईश्वर जैसी सत्ता पर विचार क्या कर सकता हूँ, इन विचारों में मैं गलतियों एवं अपनी व्यक्तिगत कुण्ठाओं के प्रति आप से क्षमाप्रार्थी हूँ।

मित्रों, ईश्वर कहते हैं-अच्छाई को, ईमानदारी को, समझदारी को। वह अच्छाई, वह ईमानदारी, वह समझदारी जो इस पृथ्वी पर हर जगह सुव्यवस्था के संचालन में खपती हैं। वैसी सुव्यवस्था जहाँ सभी एक दूसरे में प्रेम सौहार्द पूर्वक रहें। आपसी ताल-मेल ऐसा हो कि यह धरती ही स्वर्ग बन जाए। स्वर्ग अर्थात् एक ऐसा स्थान जहाँ सभी सुखी हो, जहाँ दुःख का नामोनिशान नहीं हो और यदि कहीं दुःख हैं भी तो स्नेही स्वजनों द्वारा इस प्रकार की सहयोग पहुँचायी जाए कि पीड़ित मानवता कृत-कृत हो उठे, वह भी उस दुःख को भुलकर आनन्दित, आह्लादित हो उठे। ईश्वर कहते हैं-सच्चाई को, आत्मीयता भरी मित्रता को, निष्कपट प्रेम को, उत्साह को, स्फूर्ति को, परिश्रम को, दुष्टता के दमन हेतु साहस-धैर्य-और दृढ़ता को, और उन सारे कर्तव्यों को जो इस संसार में अति सुन्दर कहा जा सके।

यदि ईश्वर ऐसा है और हमने ऐसे ईश्वर से साझेदारी की है तो घाटा का प्रश्न ही कहां उठता है। चारों ओर लाभ ही लाभ दिखेगा एवं निचले स्तर पर व्यवसाय में लाभ के अतिरिक्त भी बहुत कुछ प्राप्त होंगे। जैसे लोक सम्मान, विश्वसनीयता, आपके दृष्टिकोण में धनात्मकता इत्यादि।

मित्रों, एक पहिए की गाड़ी नहीं चल सकती, अकेले धन या ऋण आवेश से विद्युत् धारा प्रवाहित नहीं हो सकती, गृहस्थी भी तो पति पत्नी मिल कर ही बसाते हैं। अर्थात् जीवन का हर व्यापार साझेदारी की नीति पर बना हुआ है, जिसमें पग पग पर औरों के सहयोग की आवश्यकता होती है। अन्धे और पंगु के पूरक

सिद्धान्त की तरह साक्षेदारी का नियम उन सभी अपूर्णताओं को दूर करता है, जिसका सामना प्रायः संसार में हर किसी को करना पड़ता है।

जब जीवन की छोटी-छोटी बातों में ही सहयोग, साक्षेदारी का इतना महत्व है तो मनुष्य जीवन जैसे अलभ्य अवसर को सार्थक बनाने, उसे दीन-हीन तथा दरिद्र स्थिति से उपर उठाने एवं सुरदुर्लभ मानव जीवन को सफल बनाने में ईश्वर से साक्षेदारी का कितना महत्व हो सकता है यह सहज ही समझा जा सकता है।

ईश्वर के साथ साक्षेदारी का अर्थ ही है-सामंजस्य स्थापित करना, मिलजुलकर काम करना और साधकों को एकत्रित करके पारस्परिक सहमति से गतिविधियों का निर्धारण करने की रीति-नीति को अपनाना। जीवन एक व्यवसाय है, एक समूचा उद्योग है, इसमें यदि ईश्वर के साथ साक्षेदारी को जीवनतः कर लिया गया तो फिर घाटे की-असफलता की-विपन्नताओं की सम्भावना नहीं है। आज हमारा ईश्वर विमुख जीवन ही दुःख से घिरा और दारिद्र्य से भरा रहता है। यदि इसमें ईश्वर की साक्षेदारी जुड़ जाय तो अज्ञान, आशक्ति और अभाव तीनों ही संकटों से सर्वदा के लिए निवृत्ति मिल सकती है। यह दिव्य दृष्टि, ऐसी निर्मलता, जीवन को आनन्द पूर्ण बना देती है। जिसने इसका रसास्वादन किया वही मीरा, कबीर, सूर, तुलसी, नादक, रसखान, महात्मा और परमात्मा बन गया।

आइए हम भी ऐसी साक्षेदारी को कम-से-कम उस हद तक विकसित करने का प्रयत्न करें कि तुलसी-मीरा नहीं तो सहृदय मानव बनकर ही खड़े हो सकें।

ॐ शान्तिः।

शान्तिः।

शान्तिः।



हिन्दी एक अत्यन्त शक्तिशाली भाषा है।

—डॉ० कामिल बुल्के

यदि हिन्दी की उन्नति नहीं होती है तो यह देश का दुर्भाग्य है।

—बंकिमचन्द्र चटर्जी

देवनागरी दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है।

—राहुल सांकृत्यायन

माँ के प्रति

● श्री सत्येश्वर कुमार सिन्हा

अनुभाग अधिकारी

भैया ! संभालो मेरी नैया कहीं डूब न जाये ।
 ब्रह्म जगत् से जब मैं प्रक्षेपित हुआ था ।
 माँ ! तूने ही मुझे अंक में भर लिया था ॥
 हरि प्रेरित जब मैं चिल्लाया ।
 ममतामयी माँ ! तू ने ही बक्षस्थल से लगाया ॥
 भूलवश कहीं यह जीव भटक न जाये । भैया ।
 थामकर उँगली तू ने ही चलना सिखलाया ।
 बंध की बाधाओं से लड़ना सिखलाया ॥
 जगत् में अच्छे-बुरे का परिचय कराया ।
 माँ ! तू ने ही तो प्रथम ज्ञान का पाठ पढ़ाया ॥
 कहीं यह अज्ञानी विपथ न हो जाये । भैया ।
 बाह्याकाश में झंझावातों की झड़ी लगी है ।
 भूवाकाश में भयंकर हलचल मची है ।
 जीवन की चाह अब खलेश नहीं है ।
 बस एकमात्र अभिलाषा शेष बची है ॥
 थाम ले उँगली, मिला दे ब्रह्म पिता से ।
 तोड़ो ये बन्धन माँ ! मुक्त करो पीड़ा से ॥
 ऐसा न हो कहीं यह अरमान हों बिखर जावें । भैया ।



आई. टी. ए. अनुभाग की कार्य पद्धति एवं उसका महत्व

● श्री सत्येन्द्र कुमार
अनुभाग अधिकारी

भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग की विभिन्न इकाइयों के अन्तर्गत सम्पादित होने वाले क्रिया कलापों के प्रति अधिकारियों को उत्तरदायी ठहराने हेतु विभाग के अन्तर्गत ही अंकेक्षण एवं जांच का प्रावधान किया गया है। इसके लिए विभिन्न महालेखाकार कार्यालयों में एक स्वतंत्र आन्तरिक अंकेक्षण इकाई (Internal Test Audit unit) की व्यवस्था की गई। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के कार्यालय में प्रधान निदेशक (निरीक्षण) आई. टी. ए. के कार्यों की समीक्षा करते हैं।

उपर्युक्त व्यवस्था विभाग के पुनर्गठन के पूर्व प्रचलित था। पुनर्गठन के पश्चात् विभाग का विभाजन दो भागों में हो गया :—महालेखाकार (लेखा परीक्षा) एवं महालेखाकार (ले. एवं ह.)।

महालेखाकार (लेखा परीक्षा) कार्यालय में केन्द्रीय अंकेक्षण (Central Audit) का प्रावधान किया गया। केन्द्रीय अंकेक्षण के दो मुख्य अंग हैं :—केन्द्रीय अंकेक्षण दल (Central Audit Party C A P) (एवं (ii) सेंट्रल ऑडिट सपोर्ट सेक्शन (Central Audit Support Section C A S S)

सामान्य परिपत्र संख्या—19-टी. ए.-11/83 दि. 18.4.85 के पारा (ii) के अनुसार महालेखाकार (ले. एवं ह.) कार्यालय में आई. टी. ए. द्वारा ही पूर्व प्रतिपादित व्यवस्था के अनुसार अंकेक्षण एवं जांच का कार्य होने लगा।

महालेखाकार कार्यालय में आई. टी. ए. अनुभाग का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसको महत्ता तो इस बात से ही स्पष्ट होती है कि सम्पूर्ण कार्यालय में आई. टी. ए. ही एक मात्र अनुभाग है जो कार्यालय प्रधान के प्रत्यक्ष नियंत्रण एवं देख-रेख में काम करता है। वस्तुतः आई. टी. ए. अनुभाग एक दर्पण के सदृश है जिसमें महालेखाकार सम्पूर्ण कार्यालय की छवि को देख सकते हैं। एक महालेखाकार की अभ्युक्ति है कि आई. टी. ए. अनुभाग ही उनकी दो आँखें हैं, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वह आँख भगवान शंकर के तीसरे नेत्र की तरह ही है।

महालेखाकार (ले. एवं ह.) कार्यालय के अन्तर्गत आई. टी. ए. अनुभाग निम्न कार्यों को सम्पादित करता है :—

- (i) कार्यालय के अनुभागों की नमूना जांच
- (ii) वित्तीय एवं विनियोजन लेखों के प्रारूप का निरीक्षण
- (iii) स्टाफ प्रस्ताव के समर्थन में दिये गए आँकड़ों की समीक्षा
- (iv) शिकायती मामलों का पुनरीक्षण
- (v) भविष्य निधि लेखा का निरीक्षण

- (vi) लम्बित पेंशन मामलों की जाँच पड़ताल
- (vii) जी. ई. डी. अनुभाग में सर्विस कार्ड (Service Card) का परीक्षण
- (viii) महालेखाकार द्वारा समर्पित अन्य कार्य ।

सैद्धान्तिक रूप से आई. टी. ए. अनुभाग में दो इकाई होते हैं :—(i) नमूना जाँच दल (Test Audit Party T A P) एवं (ii) को ऑर्डिनेशन यूनिट (Co-ordination Unit C.U.) दोनों इकाइयों के कार्यों की सीमा निर्धारित कर दी गई है तथा उनके कार्यों का वर्गीकरण भी कर दिया गया है ।

1. नमूना जाँच दल (T A P) :—इस इकाई के अधीन निम्नलिखित कार्य आते हैं :—

- (i) अनुभाग की नमूना जाँच करना
- (ii) अकस्मात् निरीक्षण करना
- (iii) कार्यों का पुनर्मूल्यांकन
- (iv) अन्य कार्य

आवश्यकतानुसार नमूना जाँच की समयावधि भी निर्धारित कर दी गई है । कुछ अनुभाग ऐसे होते हैं जिनका वर्ष में एक बार नमूना जाँच किया जाना आवश्यक है । उदाहरण स्वरूप प्रशासन अनुभाग एवं पी. ए. ओ. । कुछ अनुभाग द्विर्वाषिक यानी दो वर्षों में एक बार जाँच के अन्तर्गत आते हैं, जैसे ऋण (Loan) जमा (Deposit) डब्लू एम. एवं एफ. एम. अनुभाग कुछ अनुभागों की नमूना जाँच चार वर्षों में एक बार की जाती है ।

वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशानुसार कभी-कभी अनुभागों का अकस्मात् निरीक्षण भी किया जाता है ।

पुनर्मूल्यांकन कार्यों के तहत भविष्य निधि के लेजर कार्ड (Ledger card) तथा लम्बित पेंशन मामलों की त्रैमासिक जाँच होती है ।

2. समन्वय इकाई (Co ordination unit CU) इस इकाई के निम्नलिखित चार कार्य हैं :—

- (i) प्रतिवेदन की अनुशंसाओं का अनुसरण कराना (Persuance of Reports)
- (ii) अर्द्धवार्षिक मूल्यांकन प्रतिवेदन (Half yearly Appraisal Reports) को मुख्यालय भेजना
- (iii) पुनरावलोकन कार्य
- (iv) अन्य कार्य

समन्वय इकाई नमूना जाँच दल तथा प्रधान निदेशक (निरीक्षण) के प्रतिवेदन पर विचार करती है तथा उसका अनुपालन सुनिश्चित कराती है । समन्वय इकाई दोनों प्रतिवेदनों से सम्बन्धित सारा पत्राचार कार्यालय के कार्यकारी अनुभागों तथा मुख्यालय से तबतक करती रहती है जबतक कि उसका अन्तिम निराकरण नहीं हो जाता है ।

नमूना जाँच के दौरान पायी गयी गम्भीर अनियमितताओं एवं दोषों को अर्द्धवार्षिक मूल्यांकन प्रतिवेदन

के माध्यम से मुख्यालय को अवगत कराया जाता है। उक्त प्रतिवेदन में निम्नलिखित तथ्यों को दर्शाया जाता है :—

- (i) नमूना जाँच के दौरान पाये गए मुख्य दोष एवं गम्भीर अनियमितताएँ
- (ii) दोषों एवं अनियमितताओं के निराकरण हेतु उठाये गए कदम
- (iii) निर्धारित पद्धति एवं प्रक्रिया के अनुपालन के सम्बन्ध में कार्यालय प्रधान की अभ्युक्ति
- (iv) दोषों से बचने के लिए सुझाए गए उपाय।

पुनरावलोकन कार्य के तहत शिकायती मामले, न्यायिक मामले तथा प्रतिवेदन सम्बन्धी कार्य आते हैं।

अन्य कार्य के अधीन प्रशासन द्वारा भेजे गए “स्टाफ केस” का निरीक्षण आता है।



देवनागरी अक्षरों से बढकर पूर्ण और उत्तम अक्षर दूसरे नहीं हैं।

प्रो० मोनियर विलियम्स

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा-
पद की अधिकारिणी है।

—सुभाषचन्द्र बोस

उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के
सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिन्दी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिन्दी और संस्कृत में समस्त भारत की आत्मा मुखरित है।

—ओडोलेन स्मेकल

व्यंग्य कविता

★ श्री राजाराम गिरि
लेखाकार

“ओलिम्पिक—चैंपियन”

“देवी जी,

आप के पतिदेव ने
निशानेबाजी में
नये कीर्तिमान बनाए हैं
इसीलिए
हम सभी पत्रकार
इन्टरभ्यू लेने आए हैं,

सुनिये,

“आबलोग तो बात को
बेकार में ही
उछाल रहे हैं
निशानेबाजी के चैंपियन
भीतर कमरे में बैठे
एक घंटे से
सुई में धागा
डाल रहे हैं”

अतिशयोक्ति का दृष्टान्त

“पड़ी अचानक नदी अपार,
कैसे उतरे घोड़ा पार ।
जब तक राणा, सोचा इस पार,
तब तक “चेतक” था उस पार ॥



“प्रेमी-रूह को आवाज”

● श्री हरि नारायण राय

ग्रुप 'घ' कर्मचारी

एक लड़का और एक लड़की दोनों प्रेमी-प्रेमिका थे। दुर्भाग्यवश लड़की की शादी दूसरे लड़के से तय हो जाती है। प्रेमी को जब पता चलता है तब वह लड़की अर्थात् प्रेमिका से कहता है कि जिस दिन तुम्हारी शादी होगी उसी दिन मैं आत्म-हत्या कर लूँगा। ठीक वैसा ही हुआ।

लड़की की शादी हुई और लड़के ने आत्म-हत्या कर ली। लड़की अपने घर से विदा होती है और लड़के के घर से अर्धी निकलती है। दोनों एक चौराहे पर जाकर मिलते हैं।

उसके बाद प्रेम-वियोग में तड़पती प्रेमी-रूह से आवाज निकलती है :—

आज तू भी जा रही है, आज मैं भी जा रहा हूँ।

आज तू भी लाल कपड़े से ढँकी है, आज मैं भी लाल कपड़ों से ढँका हूँ।

आज तेरे पीछे भी ढेर सारे लोग हैं।

आज मेरे पीछे भी ढेर सारे लोग हैं।

आज तुझे भी चार कंधों से उठाया गया है।

आज मुझे भी चार कंधों से उठाया गया है।

आज तेरे घर वाले भी रो रहे हैं।

आज मेरे घर वाले भी रो रहे हैं

फर्क सिर्फ इतना ही है कि तुम यहाँ से जा रही हो

और मैं “जहाँ से जा रहा हूँ।”



निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।

बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को मूल ॥

—भारतेन्दु

तिरंगा

● अशोक कुमार केशरी,
लेखाकार

सदा से लहराता रहा है, हिन्दुस्तान का झंडा ।
सदा लहराता रहेगा, हिन्दुस्तान का तिरंगा ॥

कश्मीर न पाकिस्तान का है, न अफगानिस्तान का
न चीन का है, न ईरान का ।
कश्मीर तो रहा है सदा, भारत का हिस्सा
कश्मीर में भी आयेगा, पुनः शांति का किस्सा ॥

सदा से लहराता रहा है, हिन्दुस्तान का झंडा ।
सदा लहराता रहेगा, हिन्दुस्तान का तिरंगा ॥

कश्मीर के लिए रक्त बहाया है हिन्दुस्तान के जवान ।
कश्मीर की रक्षा के लिए लाखों हो गये भारतीय कुर्बान ।
कश्मीर को सँवारा है हिन्दुस्तान को संतान ।
कश्मीर तो है भारत की शान ॥

सदा से लहराता रहा है, हिन्दुस्तान का झंडा ।
सदा लहराता रहेगा, हिन्दुस्तान का तिरंगा ॥

भारत ने शांति-प्रेम दिखलाया है
भारत ने अहिंसा का पाठ पढ़ाया है ।
भारत ने मानव अधिकार जताया है
भारत ने सबको गले लगाया है ।

सदा से लहराता रहा है, हिन्दुस्तान का झंडा ॥
सदा लहराता रहेगा, हिन्दुस्तान का तिरंगा ॥

गजल

● श्री शब्बीर हसन शब्बीर

वरिष्ठ लेखा परीक्षक

इतनी बड़ी हवेली खण्डहर कैसे हो गयी
 दुनिया तेरी इधर से उधर कैसे हो गयी
 तखरीब जिनका सेवा था दुनिया में यक बयक
 तामीर-ए-सखसियत पे नजर कैसे हो गयी
 हर सख्स है अना का अगर इस कदर शिकार
 है सोचने की बात गुजर कैसे हो गयी
 किसकी निगाहें नाज का उस पर हुआ असर
 शवनम थी देखने में शरर कैसे हो गयी
 हामाने खुशनवाई तो खाली पड़े रहे
 मिजराबे-गम ख्वाब के सर कैसे हो गयी
 वह तो यहाँ न आये न आने की थी खबर
 "शब्बीर" उनकी खुशबू मगर कैसे हो गयी



पेंशन नियंत्रण अनुभाग की अनुभूति

● श्री सूर्य मोहन प्रसाद

अनुभाग अधिकारी

बिहार पेंशन नियम 20 जनवरी 1950 से लागू किया गया। इस नियम के अन्तर्गत राज्य सरकार के सभी राजपत्रित एवं अराजपत्रित सेवा निवृत्त कर्मचारियों के लिए पेंशन निर्धारण का प्रावधान सम्मिलित है। पेंशन सम्बन्धी कार्यों को सुचारु रूप से करने हेतु बीस पेंशन अनुभाग इस कार्यालय में स्थापित किए गए हैं। पेंशन-1 अनुभाग एक नियंत्रण कक्ष के रूप में कार्य सम्पादित करता है। सभी पेंशन अनुभागों द्वारा निष्पादित समस्त पेंशन मामलों का प्राधिकरण और पेंशन स्कन्ध से संबंधित समस्त प्रतिवेदनों एवं विवरणियों का संकलन कर आइ.टी.ए. अनुभाग के माध्यम से मुख्यालय को सूचना देता है। साथ ही समय-समय पर मुख्यालय से प्राप्त निदेशों तथा राज्य सरकार द्वारा पारित आदेशों से भी सभी पेंशन अनुभागों को अवगत कराया जाता है तथा उसे समुचित रूप में पालन करने हेतु निगरानी रखना इस अनुभाग का विशेष कार्य-क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार के कर्मचारियों, प्रमंडलीय लेखाकारों, अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के पेंशन रूपान्तरण करने के मामलों का प्राधिकरण एवं अनुसरण यहाँ होता है। पेंशन अनुभाग द्वारा पेंशन के मामलों का प्राधिकरण एवं पत्राचारों का वहिर्गमन का कार्य का सम्पादन भी इसी अनुभाग के माध्यम से होता है।

सभी अनुभाग अधिकारियों एवं सहायक लेखा अधिकारियों को आश्चस्त करना है (यकीन दिलाना है) कि कोई भी चीज ऐसी स्वीकार नहीं की गई है जिसकी स्पष्ट संस्वीकृति नहीं है। उनके द्वारा अनुभाग के प्रत्येक सदस्य को सौंपे गये कार्यों के विस्तार की अनुमोदित वितरण सूची ओ. पी. मैनुअल के अध्याय-1 के पैरा-5 में वर्णित तथ्यों के अनुरूप है अथवा नहीं।

पेंशन-1 अनुभाग द्वारा राज्य सरकार को निदेश दिया गया है कि सरकारी सेवकों की सेवा-निवृत्ति के फलस्वरूप उनके पेंशन कागजात भेजते समय वित्त विभाग द्वारा विहित जाँच प्रपत्र के अनुसार इसकी पूर्णरूप से जाँच कर लेने के उपरान्त महालेखाकार के कार्यालय में अन्तिम पेंशन निर्धारण हेतु समर्पित किया जाय। लेकिन व्यावहारिक रूप में ऐसा प्रायः नहीं किया जाता है जिससे सेवा निवृत्त कर्मचारियों को काफी परेशानी एवं आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी तो ऐसा देखा गया है कि राज्य-कर्मियों का पेंशन कागजात बिना जाँच पड़ताल किये दस साल बाद विभाग द्वारा प्रेषित किया जाता है। ऐसी स्थिति में सेवा-निवृत्त सरकारी सेवक आर्थिक कठिनाईयों को झेलते हुए आशा की उम्मीद लिए महालेखाकार के कार्यालय पहुँचता है। जब उन सेवा निवृत्त अधिकारी से बातें होती हैं तो उनकी आँखों में सहायता की उम्मीद स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होनी है। तब एक विडम्बना-सा लगता है कि जो व्यक्ति जिस विभाग में सेवा निवृत्ति तक कार्यरत रहते हैं, उनके पास जाने से कतराते हैं तथा इस कार्यालय से अनुरोध करते हैं कि उनके विभाग से पत्राचार कर उनका पेंशन कागजात मंगा लें एवं तदनुसार प्राधिकार पत्र निर्गत कर दें।

नियमतः महालेखाकार-कार्यालय का यह कार्य नहीं है, किन्तु सेवा निवृत्त कर्मियों की विवसता एवं सामाजिक दृष्टिकोण से उनके सहायतार्थ कभी-कभी ऐसा कदम वरिष्ठ अधिकारी के आदेश से उठाना पड़ता है।

कभी-कभी ऐसे सेवा निवृत्त कर्मियों से बातें करने का असर मिलता है कि सामाजिक-पारिवारिक मान्यताओं से घिरी कुरीतियों के अन्तर्गत अपनी लड़की की शादी करना चाहता है, लेकिन अर्थाभाव के कारण उन मान्यताओं को पूरा करने में असमर्थ व्यक्ति बुढ़ापे का सहारा पेंशन राशि का कुछ भाग को पेंशन रूपान्तरण कर एक मुस्त रूपया पाना चाहता है जिससे अपनी लड़की की शादी सामाजिक मान्यताओं के अन्तर्गत कर सके, भले ही उनकी स्थिति दर्दनाक क्यों न हो। वैसे सेवा निवृत्त कर्मियों की पेंशन रूपान्तरण राशि का प्राधिकार पत्र प्राथमिकता के आधार पर निर्गत कर देते हैं जिससे वे सामाजिक अभिशाप से यथाशीघ्र मुक्ति पा सकें। इस प्रकार अपना काम होते देख आगन्तुक के चेहरे पर बनावटी मुस्कान उभर आती है, लेकिन कुछ ही छनबाद उन्हें सामाजिक कुरीतियों की याद उभरी मुस्कान को काफूर कर देती है। इस प्रकार प्रतिदिन कई सेवा-निवृत्त कर्मियों से बातें होती हैं। उनकी समस्याओं को हम सावधानी पूर्वक सुनते हैं तथा यथासम्भव नियम के दायरों के अन्तर्गत समाधान करने का प्रयास भी करते हैं।

पेंशन-1 अनुभाग पेंशन स्कन्ध में एक कड़ी का काम करता है। पेंशनभोगी द्वारा दी गई शिकायतों को यथाशीघ्र निपटाने का सुझाव एवं निदेश समय-समय पर पेंशन अनुभागों को दिया जाता है। राज्य सरकार द्वारा निर्गत अस्पष्ट आदेशों को स्पष्ट कर 'कार्यालय आदेश' पेंशन स्कन्ध में निर्गत करते हैं तथा इस आदेश के अन्तर्गत कार्य निष्पादन करने का निदेश वरिष्ठ अधिकारी के आदेश से देते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि पेंशन निष्पादन का कार्य सम्भवतः यथाशीघ्र हो सके।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि पेंशन नियंत्रण अनुभाग का उद्देश्य सेवा निवृत्त कर्मियों को सहायता पहुँचाना एवं पेंशन संबंधी पूर्ण जानकारी देना है। पेंशन निष्पादन की दिशा में अधिक गति लाने हेतु महा-लेखाकार कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों की कार्य-प्रणाली में सुधार लाना होगा तथा रेकर्ड एवं अन्य पेंशन कागजात का रख-रखाव वैज्ञानिक ढंग से करना होगा।

कविता “फिर भी कहते हो”

● श्री लक्ष्मी चौधरी

पेंशन-5

चंदन जैसी माटी में, आतंकवाद की फसल पक रही
अमृत जैसी पानी में, अलगाववाद की जहर घुल रही
षट्कृतु की सुगन्धित वायु में, मानसिक गुलामी की गंध फैल रही
फिर भी कहते हो.....
देश इक्किसवीं सदी में जाएगा ।

कितने ऊँच-नीच की खाई में गिरकर फँस रहे हैं
कितने बेरोजगारी के दल-दल में फँस रहे हैं
कितनी बेटियाँ बहेज की आग में जलायी जा रही हैं
फिर भी कहते हो.....
देश इक्किसवीं सदी में जाएगा ।

स्वार्थ हेतु इंसान बिक रहा है, संकोण विचारों की बाजार में
देश ब्रेम और बलिदान बिक रहा, तृष्णा की छाया में
रुपये के लोभ में सारा इंसान बिक रहा, बढ़ती हुई अर्थ प्रभाव में
फिर भी कहते हो.....
देश इक्किसवीं सदी में जाएगा ।

जहर का मिलावटी, सामान बिक रहा है
धाराब बिक रही है, लाँट्री बिक रही है
चोरी छुपे नहीं, खुलेआम बिक रही है

फिर भी कहते हो.....

देश इक्कसवीं सदी में जाएगा ।

कोढ़ सा कुंठित विचार है

ऊपर से नीचे तक कंसा अष्टाचार है

खादी कपड़ों में ढंका राजनीतिक अत्याचार है

अखबार की पृष्ठों पर हिंसा और बलात्कार है

फिर भी कहते हो.....

देश इक्कसवीं सदी में जाएगा ।

भारतीय संस्कृति सभ्यता का भाव गिर गया

लाज-शर्म का शृंगार मिट रहा है

नैतिकता वाला भारतवर्ष बिक रहा है

फिर भी कहते हो.....

देश इक्कसवीं सदी में जाएगा ।



अंतर्लेखा एवं हकदारी (पूर्वी क्षेत्र) कैरम प्रतियोगिता, 1994 ! एक रिपोर्ट

श्री आलोक कुमार,

लेखा परीक्षक, कल्याण अनुभाग,
इण्डोर गेम्स सचिव, रि० क्लब

अंतर्लेखा एवं हकदारी विभागीय (पूर्वी क्षेत्र) कैरम प्रतियोगिता—1994 अपने कार्यालय भवन के परीक्षा हॉल में दिनांक 23-1-95 से 27-1-95 तक आयोजित की गई। इस अवधि में सबों ने, प्रतियोगिता का पूरा आनन्द उठाया। सम्पूर्ण कार्यालय में खेल-कूद का माहौल था।

प्रतियोगिता को पटना में आयोजित करने के लिए बहुत दिनों से प्रयास चल रहा था। अंततोगत्वा दिनांक 3-1-95 को मुख्यालय ने अपनी सहमति दे दी। इस तरह मात्र बीस दिनों की अल्पावधि में इसे आयोजित किया गया।

इस कार्यालय के इतिहास में पहली बार आयोजित इस प्रतियोगिता में तत्कालीन महालेखाकार (ले. ब.) 1, बिहार, पटना स्वयं चैयरमैन और आयोजक बने। उनकी देख-रेख में एडवाइजरी, अपील, तकनीकी, सामग्री, चिकित्सा, वेन्यू, आर्गंगाइजिंग, प्रेस, एकोमोडेशन, रिसेप्शन, खरीद-खर्च, लेखा आदि समितियां बनाई गई ताकि यह महान आयोजन पूर्णरूपेण सफल हो सके। एडवाइजरी समिति सबसे महत्वपूर्ण थी जिसका काम आयोजकों को सलाह एवं सुझाव देना तथा विभिन्न समितियों से तैरतम्य बनाए रखना था। इस समिति में श्री स्वरूप नन्दक्योल्यार, बरिष्ठ उप महालेखाकार श्रीमती माला सिन्हा, बरिष्ठ उप महालेखाकार, श्री गिरीश चन्द्र लाल श्रीवास्तव, तत्कालीन उप महालेखाकार, श्री जे० एन० पाठक, उप महालेखाकार तथा श्री ए० के० भट्टाचार्य कल्याण अधिकारी थे।

प्रतियोगिता में लगभग बीस टीमों के भाग लेने की संभावना थी किन्तु अन्ततः सिर्फ 13 (तेरह) टीमों ने ही इसमें भाग लिया। संभवतः उत्तर-पूर्व में पड़ रही भीषण ठंड के कारण बहुत-सी टीमों नहीं आ पाई। महालेखाकार, आसाम, त्रिपुरा, मालीगाँव, गोरखपुर, बंगाल, राँची, पूर्व रेलवे बंगाल, आर्डिनेन्स-कलकत्ता, पी० एण्ड टी० कलकत्ता, पी० एण्ड टी० पटना तथा मेजबान पटना कार्यालय की टीमों ने अपनी भागीदारी दी। मेजबान होने के कारण हमारे कार्यालय की दो टीमों ने क्रमशः पटना ए और पटना बी के नाम से खेला। टीम ए के कप्तान श्री के. डी. सिंह तथा टीम बी के कप्तान श्री आलोक कुमार, सचिव, रिक्रिएशन क्लब स्वयं थे।

दिनांक 20-1-95 को अपराह्न 3 बजे एडवाइजरी कमिटी के साथ एक भव्य प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित

किया गया जिसे महालेखाकार महोदय ने स्वयं संबोधित किया। यह कांफ्रेंस शत-प्रतिशत सफल रहा और दिनांक 21-1-95 से 28-1-95 तक बिहार के अखबारों और दूरदर्शन पर इस महान आयोजन की खबरें एवं सलकियां सुखियों में रही।

दिनांक 21-1-95 को निर्णायकों का एक दल पटना पहुँचा जिसमें बंगलोर, केरल तथा नागपुर के अनुभवी निर्णायक शामिल थे। इनमें श्री एम. एस. जयराम, श्री जे. सत्यकुमार (बंगलोर) श्री बी. विष्णु कुमार, श्री के. एन. रामाचन्द्रन (केरल), श्री एस रमजान, श्री ए. पी. मालवार (नागपुर) थे। श्री एम. एस. जयराम को आर्गनाइजिंग समिति ने मुख्य निर्णायक घोषित किया। दिनांक 22-1-95 को सुबह से टीमें पटना पहुँचने लगीं। हमारी रिपोषन समिति के सदस्यों ने उनका स्वागत किया। कारों के द्वारा उन्हें चार विभिन्न होटलों में लाया गया और वहाँ ठहराया गया। टीमों के पहुँचते ही उन्हें आयोजन समितियों, बिहार के भ्रमण स्थलों, खिलाड़ियों की सूची तथा प्रेस रिलीज की प्रतियां दी गईं ताकि उन्हें इस प्रतियोगिता की भव्यता तथा आयोजन के स्तर का पता चल सके।

हमारी समितियों के सारे व्यक्ति दिनांक 22-1-95 (रविवार) को रात 11.00 बजे तक अनवरत काम करते रहे और हमने पूरी तैयारी कर ली। वेन्यू पर निर्णायकों के शानदार मैच के सामने नौ "क्लेयिंग एरीना" जिसका आकार 10'x10' था, बनाया गया। लाइटिंग तथा माईक की समुचित व्यवस्था की गई। जगह-जगह पोस्टर्स लगाए गए ताकि खिलाड़ियों को असुविधा न हो और अतिथि एवं दर्शक मैचों का आनन्द ले सकें।

दिनांक 23-1-95 (सोमवार) को 9.30 में सम्पूर्ण हॉल उपस्थित कर्मचारियों, अतिथियों तथा खिलाड़ियों से भर गया। विधिवत् घोषणाओं के पश्चात् इण्डोर गेम्स के सचिव ने मुख्य अतिथि को माल्यार्पण किया तथा श्री के. डी सिंह ने खिलाड़ियों को साफ-सुथरी खेल भावना की शपथ दिलाई। तत्पश्चात् महा-लेखाकार श्री डी. एन. प्रसाद तथा वरिष्ठ उप महालेखाकार श्रीमती माला सिन्हा ने बोर्ड नम्बर पाँच पर आकर "ओपनिंग स्ट्राइक" किया और प्रेस फोटोग्राफरों के कैमरों के फ्लैश चमक उठे। तालियों की भीषण गड़गड़ाहट के मध्य इस प्रतियोगिता का शुभारम्भ हुआ।

दिनांक 23-1-95 से टीम स्पर्धाएँ तथा 25-1-95 से एकल स्पर्धाएँ खेली गईं। टीम स्पर्धाओं में हमारी टीम बी सेमी फाइनल में पहुँची जहाँ उसकी टक्कर पिछले विजेता आसाम की टीम से हुई और हम हार गए। हमारी टीम—ए अत्यधिक मजबूत थी और फाइनल तक जाने का दमखम रखती थी, फिर भी उसे बंगाल की अनुभवी टीम के हाथों क्वार्टर फाइनल में हार का सामना करना पड़ा। टीम-स्पर्धा अन्ततः आसाम पुनः जीत गया। एकल स्पर्धाओं में आसाम का बर्चस्व पी० एण्ड टी ऑडिट पटना के (स्टेट खिलाड़ी नं० 4) श्री पंकज प्रियदर्शी ने तोड़ा जिसने आसाम के श्री आर० के० मिश्रा को संघर्षपूर्ण और रोमांचक फाइनल में हरा दिया। श्री सुदिप्तो गुप्ता का प्रदर्शन बहुत सराहनीय रहा जिसे श्री आर० के० मिश्रा ने सेमी फाइनल में मात दे दी। महिला वर्ग में तसमीना सुलतान जी (आसाम) देवाश्री देवबरूआ (त्रिपुरा) को हराकर विजयी हुईं।

इस प्रतिस्पर्धाकी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं :—

इस पूरी प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों की ओर से एक भी प्रोटेस्ट निर्णायकों के विरुद्ध नहीं हुआ और न ही मुख्य निर्णायक को किसी भी बोर्ड पर निर्णय सुनाने जाना पड़ा। यह अपने आप में बहुत बड़ी

सफलता है और हमारी तकनीकी पहुँच और समझ का आभास दिलाती है। मुख्य निर्णायक स्वयं इस पर आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने कहा कि हम पूर्वी क्षेत्र तथा अन्तर्क्षेत्र की किसी भी प्रतियोगिता का आयोजन करने में सक्षम हैं। कुल मिलाकर 31 (एकतीस) मैच टीम स्पर्धाओं में तथा 37 (सैंतीस) मैच एकल स्पर्धाओं में खेले गए। श्री पंकज प्रियदर्शी ने प्रतियोगिता के दौरान अभूतपूर्व प्रदर्शन करते हुए बिहार का नाम ऊँचा किया। उसने एक बार "व्हाइट स्लैम" (हीट फिनिश) भी मिस किया।

खिलाड़ियों को कार्यालय कैटीन में हर प्रकार के लंच व्यवस्था की गई थी। खिलाड़ियों और निर्णायकों के लिए चाय पान की उत्तम व्यवस्था थी। खिलाड़ियों को प्रति दिन प्रेस कटिंग की प्रतियाँ वितरित की जाती थीं। उन्हें होटल से वेन्यू लाने तथा वापस ले जाने के लिए भी कारों की व्यवस्था थी।

दिनांक 27-1-95 को फाइनल मैच हुआ तथा अपराह्न तीन बजे स्थानीय विश्वेश्वरैया भवन में पुरस्कार वितरण हुआ जिसके मुख्य अतिथि श्री एस. एन. सिन्हा, वित्त आयुक्त, बिहार सरकार थे। वहाँ से वापस आने पर वेन्यू के मंच पर सभी विजेताओं की आयोजन समिति के साथ तस्वीरें ली गईं।

कुल मिलाकर 100 खिलाड़ियों (महिला सहित) तथा छः ऑफिसयलों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। टीमों के जाने से पहले उनसे फ्रीड्रैक लिया गया जिसमें टीम मैनेजरो ने इस अभूतपूर्व और जबरदस्त आयोजन की भूरी-भूरी प्रशंसा की। संभवतः यह आयोजन "नेशनल स्तर" से किसी भी तरह कम नहीं था। यह हमारा पहला आयोजन था और इसमें ऐतिहासिक सफलता मिली जिसका हमें गर्व है। आशा की जाती है कि इस सफलता से हमारे कार्यालय को प्रति वर्ष खेलों का एक आयोजन मुख्यालय दे सकता है।

दिनांक 25-1-95 को हर खिलाड़ी तथा निर्णायकों को मोमेण्टो (अशोक स्तम्भ) वितरित किया गया तथा उनकी वापसी से पहले उन्हें प्रतियोगिता के दरम्यान खींचे गये फोटोग्राफ्स भी दिए गए ताकि यह आयोजन उन्हें सदा याद रहे।

श्री ए. के. शरण, श्री सुरेन्द्र मोहन, श्री के. डी. सिंह, श्री लाल बहादुर सिंह, श्री पी. के. प्रसाद, श्री सी. एन. मिश्रा, श्री केदारनाथ राय, श्री जे. पी. मल्ल, श्री सुनील कुमार भगत, श्री श्रीपत राव, श्री चन्द्र मोहन कुमार तथा अन्य सारे सदस्य विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने महत्वपूर्ण योगदान देकर इस आयोजन को पूर्णरूपेण सफल बनाया है।

इस शानदार आयोजन और तकनीकी समझ वृद्ध को देखते हुए आवश्यकता इस बात की है कि अगली बार होने वाली स्पोर्ट्स कोटा नियुक्ति में कैरम खिलाड़ियों को भी प्रश्रय मिले तो उत्तम हो ताकि भविष्य में इस प्रकार की प्रतियोगिता में विजयश्री इस कार्यालय के गले लग सके।

● “एक ही रास्ता” ●

● श्री युगल किशोर झा,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

देवि प्रपन्ना तहरे प्रसीद,
प्रसीद भातूर्जगतोऽखिलस्य ।

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
तवमोक्षवरी देवि चराचरस्य ॥

शरणागत दीनार्तपरित्राणपरायणं,
सर्वस्याति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुतं ।

यह संसार असत्य है, क्षणभंगुर है। जितनी भी चीजें आपके समक्ष हैं जिन्हें भी आप देख रहे हैं, ये सभी नाशवान हैं। चारों तरफ, हर कोई अपने को अशांत, भयभीत, चिन्तित महसूस करता है। कोई सुखी नहीं है। किसी न किसी प्रकार का दुःख हर एक को है। किसी को शारीरिक कष्ट है, तो किसी को मानसिक कष्ट है, तो किसी को आर्थिक कष्ट है, इन कष्टों से छुटकारा पाने का मात्र एक ही रास्ता है और वह है अपने इष्ट के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित होना। इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। आपका सोचा हुआ कुछ नहीं होता है। जो उनका सोचा हुआ है वही होता है। आप जरा विचार करें। आप एक से एक दुर्गम रास्ता को पार कर अपने मंजिल के नजदीक पहुँच चुके हैं। अभी तक तेरासी लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे योनि को पार कर आप मानव योनि प्राप्त कर चुके हैं। आप सोचें, इन योनियों को पार करने में आपने अब तक कितना कष्ट उठाया होगा। अब आप अपने मंजिल के बिल्कुल करीब पहुँच चुके हैं। फिर भी आपका रास्ता बहुत ही बीहड़ है, अति दुर्गम है, कठिनाइयों से भरा हुआ है, उसे पार करने के लिए आपको एक मजबूत सवारी की आवश्यकता है। अगर आपकी सवारी कमजोर होगी तो आप उस डगर को पार नहीं कर सकेंगे और कभी भी मंजिल पर नहीं पहुँच सकेंगे अब तक जितने रास्ते को आप पार कर चुके हैं उससे यह रास्ता ज्यादा कठिन है, कारण अब आपको मोह, माया, ममता जैसी खाइयों को पार करना है। अतः आपको मजबूत सवारी की आवश्यकता है।

आप प्रश्न करेंगे, वह सवारी मुझे कहाँ प्राप्त होगी? वह रास्ता मुझे कौन दिखायेगा। आपको उस रास्ते की जानकारी नहीं है, इसके लिए आपको गुरु के शरण में जाना होगा। गुरु का अर्थ होता है जो अंधकार से प्रकाश में लावें। आप अंधकार में भटक रहे हैं आप मोह माया के चक्कर में फंसे हुए हैं। इस मोह माया असार संसार से मुक्ति प्राप्त करने के लिए आपको प्रथम गुरु के शरण में जाना होगा। गुरु ही आपको मजबूत सवारी के रूप में इष्ट मंत्र देंगे जिसका अवलंबन लेकर आप अपने मंजिल पर पहुँच पायेंगे। गुरु के द्वारा जो मंत्र आपने ग्रहण किया है उसका सुमिरण, आप अनवरत करते रहें। इसे अपने स्वासों के अन्तर्गत लाने का अभ्यास करें। माला लेकर हाथ में सुमिरण करने का समय आपके पास नहीं है। आप गृहस्थ आश्रम

में हैं आपको गृहस्थी का भी कार्य करना है आपके पास ऐसा समय नहीं है कि आप अपनी गृहस्थी का कार्य छोड़कर माला लेकर बैठ जाएँ। ऐसा करने पर आप कर्तव्यच्युत हो जाएंगे। आपका अपने परिवार के प्रति जो कर्तव्य है वह नहीं कर पायेंगे। अतः आपको गुरु के द्वारा प्राप्त मंत्र को मन के द्वारा ही जपना है। इसे अजपा जाप कहा जाता है। हालांकि यह कहना जितना आसान है करना उतना आसान नहीं है फिर भी अभ्यास करने पर एवं इष्ट की कृपा हो जाने पर यह बहुत ही आसान हो जाता है। आपको अपने मन का निग्रह करना होगा। मन का निग्रह आप जबरदस्ती नहीं कर पायेंगे और न अभ्यास से कर पायेंगे। कारण मन इतना चंचल है। इतना बलवान है कि इसके सामने कोई दूसरा इसका सामना करने वाला नहीं है। इसे निग्रह करने के लिए इसे छोड़ दीजिये। एक उच्छृंखल घोड़े को कंट्रोल करने के लिए उसका लगाम ढीला छोड़ना पड़ता है और थकने के बाद वह घोड़ा कंट्रोल हो जाता है इसी प्रकार मन को ढीला छोड़ दीजिये। वह खुद ठेस खाकर अन्तर्मुखी हो जाएगा। आप थोड़ा सजग रहें। मन ही है जो आपको बंधन की ओर ले जाता है और वही मुक्ति भी दिलाता है। “मन एवं मुनुष्याणां कारणं मोक्षबन्धनम्”। जब तक मन का निग्रह नहीं होगा, आपका मनसा जाप नहीं हो पाएगा, और जब आप मनसा जाप का अनुभव करने लगेंगे तब आप पायेंगे कि जो रास्ता आपके लिए अति दुर्गम, कठिनाइयों से भरा हुआ दीख रहा था वह आज कितना सुगम कितना सरल हो गया है। आप हर अवस्था में कितना शांत एवं सुखी अनुभव कर रहे हैं। आपके पास समय नहीं है। कलियुग में वैसे भी आपकी आयु बहुत कम है। बाल्यावस्था आप को खेल में ही बीत जाती है। युवावस्था में आपको संसार सुखमय प्रतीत होता है। प्रौढ़ावस्था आपको अपनी दायित्व की पूर्ति करने में ही बीत जायगी। वृद्धावस्था में आपको शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ेगा फिर आप कैसे अपने मंजिल पर पहुँचेंगे? अतः आप अभी से ही अपने मंजिल की ओर अग्रसर होने के लिए प्रथम गुरु का आश्रय लें एवं गुरु के दिखाये मार्ग की ओर अग्रसर हो जायें। समय बहुत ही कम है। अन्यथा आप रास्ते में भटकते रहेंगे, कभी मंजिल पर नहीं पहुँच पायेंगे; मोह माया ममता के जाल में फँसे रह जायेंगे। कहीं आपका यह जन्म बेकार न चला जाय।

आपने मकड़ा को देखा होगा। मकड़ा अपने शरीर के तन्तु से जाल बनाता है। होशियार मकड़ा कभी यहाँ, कभी वहाँ, जाल बनाता रहता है, उसमें फँसता नहीं है, लेकिन आपने देखा होगा कि मूर्ख मकड़ा अपने ही द्वारा बनाये हुए जाल में फँसकर मर जाता है। अतः आप भी होशियार मकड़ा बनने की चेष्टा करें। आप अकेले आये थे। आपने अपनी माया का संसार खुद रचा है। आप मां-बाप बने, दादा-दादी बने। आपने इस जाल को फैलाया है। अतः इस जाल को समेटने के लिए आपको सजग रहना होगा। इससे मुक्ति पाने के लिए आपको अपने इष्ट के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित होना होगा। उन्हीं की एक मात्र कृपा से आप इस मोह माया से मुक्ति प्राप्त कर पायेंगे। मोह, माया, ममता से मुक्ति पाना अत्यन्त कठिन है। बिना भगवान की कृपा से यह संभव नहीं है। इसके लिए बिना शरणागत हुए कोई दूसरा उपाय नहीं है। आपका अपना सिर्फ आपका इष्ट है और जिसे आप अपना समझते हैं वह कोई अपना नहीं है।

आप अपने को यदि पूर्ण रूपेण अपने इष्ट को समर्पित कर देते हैं तो आप कर्त्ता नहीं रह जाते हैं। जब आप कर्त्ता नहीं रह जाते हैं तो आप के ऊपर आपके कर्म का कोई फल नहीं पड़ता है आप सिर्फ निमित्त मात्र हो जाते हैं। आपके सारे कर्म, अकर्म, विकर्म, सुकर्म सभी आपके इष्ट को समर्पित हो जाते हैं। आप हर दृष्टिकोण से अपने को उन्मुक्त पायेंगे। आपको न मोह चरेगा, न किसी प्रकार की चिन्ता ही सतायेगी। आपका एक ही कर्त्तव्य होगा Duty for duty sake कर्त्तव्य के नाम पर कर्त्तव्य करना। आपके इष्ट

आपसे कौन सा कार्य कराता है आपको करते रहना है। उसके फल के बारे में भी आपको कुछ सोचना नहीं है। बंगला में एक कशुवत है "जेमनि नचाय तेमनि नाचि"। आप तो सिर्फ उनके हाथ का खिलौना हैं। आपको अपने मां-बाप के प्रति, अपने बच्चों के प्रति अपने समाज के प्रति जो कर्तव्य है, करते रहना है। भगवान कृष्ण ने कहा है "कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन"। आपको कर्म करना है, उसके फल के बारे में कुछ भी नहीं सोचना है। जब आप पूर्णरूपेण अपने इष्ट पर समर्पित हो जाते हैं तो सारे कर्म आपके इष्ट के हो जाते हैं, आप सिर्फ निमित्त-मात्र होते हैं। आप कमल के पत्ते की तरह हो जाते हैं उस पर जैसे जल में रहते हुए भी जल नहीं पकड़ सकता है उसी प्रकार मोह माया के जाल में रहकर भी आप माया में नहीं फसेंगे, आप मोह से परे हो जाएंगे।

यह आपको कठिन मालूम पड़ता होगा, है भी बहुत कठिन लेकिन आप अपने को समर्पित कर देखें यह कितना सुगम है। बच्चा जब जन्म लेता है तो वह मां पर जबतक निर्भर रहता है, मां उसकी देखभाल करती है। उसे कब दुध देना है, कब तेल लगाना है, कब नहाना है, कब सुलाना है, इसका भार उसकी मां पर है। उस बच्चे को किसी प्रकार का डर नहीं है। उसके सामने सांप भी आ जायगा तो वह उसे भी पकड़ लेगा, उसे किसी प्रकार का डर नहीं रहता है, क्यों? चूंकि वह मां पर निर्भर है। अगर आप भी बच्चा बन जाते हैं, अपने इष्ट पर पूर्णरूपेण समर्पित हो जाते हैं तो आपके योगक्षेम का वहन आपके इष्ट करेंगे। आप निर्भय होकर इस संसार को पार कर लेंगे। आप अपने को समर्पित कर देखें तो? इसके अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता नहीं है। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा "सर्वधर्माणां परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज। अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि या शुभः।" आप एक कदम बढ़ेंगे, वे आपको संभालने के लिए आपको गोद में लेने के लिए दस कदम दौड़ेंगे। आप बढ़कर तो देखें। अरे आपके साथ जो भी घटित हो रहा है वह सब पहले से ही उनके द्वारा निर्धारित है। फिर उसके लिए सोचना क्या? आपके मन में यह प्रश्न उठेगा कि भगवान को तो मैंने देखा नहीं है। उनका कैसा रूप है वे कैसे हैं? अरे वे सर्वशक्तिमान हैं। विज्ञान ने भी साबित किया कि कोई सुप्रीम पावर है जो इस ब्रह्माण्ड को नियंत्रित किये हुए है और उस सुप्रीम पावर को वैज्ञानिकों ने गौड (God) की संज्ञा दी है। हमारे ऋषि मुनियों ने, योगसाधकों ने इस ब्रह्म को ज्योतिर्गुण के रूप में देखा है। वे कण-कण में व्याप्त हैं। शक्ति का आप अनुभव कर सकते हैं। शक्ति को कोई देख नहीं सकता है। हर जीव चाहे वह सजीव हो या निर्जीव हो उसके अन्दर में शक्ति है और जबतक शक्ति रहती है तभी तक उसका अस्तित्व रहता है। शक्ति चले जाने पर उसे हम मौत की संज्ञा देते हैं। उसी शक्ति का नाम आत्मा है। जिसका हम सिर्फ अनुभव करते हैं। आत्मा को कोई देख नहीं सकता है। कोई भी डाक्टर उसके निवास को नहीं बतला सकता है। शरीर के किस भाग में वह आत्मा रहता है कोई डाक्टर नहीं बतला सकेगा। उसका कोई डाक्टर ऑपरेशन कर बता तो दे। उसका अनुभव साधक ही कर सकता है। उसे आप इस आँख से नहीं देख सकते हैं। उसे देखने के लिए आपको तीसरा नेत्र खोलना होगा और वह नेत्र बिना आपके इष्ट की कृपा से नहीं खुलेगा। वही शक्ति भगवान है, वही आत्मा है, वही परमात्मा का अंश है। ईश्वर अंश जीव अविनासी उन्हें जानने के लिए उन्हीं की कृपा की आकांक्षा करनी पड़ेगी। भक्त तुलसीदास जी ने रामायण में कहा है, "सोई जानेउ जेही देह जनार्द। जानत तुमही तुमभी हो जाई"। आप ने भगवान को देखा नहीं है, लेकिन उनकी कृपा का अनुभव अवश्य ही किया होगा। उनकी कृपा का जो अनुभव आपने किया होगा वही उनका दर्शन है एवं उनके अस्तित्व को वही दर्शाता है। आप सोचते हैं कुछ और, होता है कुछ और ही। ऐसा करने वाला कौन है?

भक्त प्रह्लाद से जब पूछा गया तुम्हारा भगवान कहीं है ? भक्त प्रह्लाद ने हिरण्यकश्यपु को बताया कि वे हममें तुममें, खड्ग में खंभ में, हर जगह निवासमान हैं और फिर खंभ से भगवान प्रकट हो गये। भक्त प्रह्लाद पूर्णरूपेण अपने इष्ट पर समर्पित हो गये थे जिस कारण हिरण्यकश्यपु द्वारा जितनी भी यातनायें उन्हें दी गयीं, भक्त प्रह्लाद पर उनका कोई असर नहीं हुआ। मीरा के लिए विष अमृत हो गया। भगवान का दर्शन आप अपने तीसरे नेत्र को जगाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। अर्जुन हमेशा कृष्ण के साथ ही रहते थे लेकिन कृष्ण को अपना सखा ही समझते थे। जब अर्जुन को कृष्ण ने दिव्यचक्षु दिया तब वे कृष्ण के विराट रूप को देख पाये।

आप जब अपने को पूर्ण रूपेण अपने इष्ट पर समर्पित कर देते हैं तो आपको उनके दर्शन की भी कोई आवश्यकता नहीं रह जायगी। आपका सारा भार वे ले लेंगे। आप निर्भय होकर संसार सागर को पार कर जायेंगे। आपको अन्य किसी प्रकार की साधना करने की आवश्यकता नहीं होगी। आप विश्वास कर देखें तो।

मैंने बहुतों के मुख से सुना, लोग कहा करते हैं कि भगवान बहुत जाँचना करते हैं। लेकिन मैं मानता हूँ कि इष्ट कभी अपने भक्त की जाँचना नहीं करते हैं। वे तो रक्षा करते हैं। ग्रह के चक्कर में लोग फँसते हैं, उस चक्कर से इष्ट रक्षा करते हैं, वे जाँचना नहीं करते हैं। आखिर ग्रह भी तो उन्हीं का बनाया हुआ है और ग्रहों को भी कार्य पूरा करना ही है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आप मोह माया, ममता एवं चिन्ताओं से मुक्त होना चाहते हैं, यदि आप शांति चाहते हैं, आप इस संसार के आवागमन से मुक्ति चाहते हैं तो, यदि आपने गुरु से मंत्र ले लिया है तब तो ठीक ही है, यदि नहीं लिया है तब अविलम्ब आप निम्नांकित कार्य करें :-

(१) आप किसी अच्छे गुरु से दीक्षा प्राप्त कर लें। उस पर विश्वास रखें श्रद्धा रखें।

(२) गुरु द्वारा ली गई दीक्षा के अनुसार उस मंत्र को अपने इष्ट को प्रणाम कर धारण कर लें एवं अनवरत मनसा जाप करने का अभ्यास करें क्योंकि आपके पास समय नहीं है, अतः चौबीस घंटा सुमिरण करने के लिये उसे मन में आत्मसात् कर लें। यही मंत्र आपको अपने इष्ट के पास ले जाने का रास्ता दिखायेगा, आप अपने इष्ट के पास पहुँच सकेंगे। यही मंत्र आपको मोह माया ममता एवं चिन्ताओं से मुक्त करा देगा। आप अपने आपको पूर्णरूपेण अपने इष्ट को समर्पित कर दें। वे आपके योगक्षेम का वहन करेंगे। वे खुद आपका हाथ पकड़ कर रास्ता पार करावेंगे। मानव-योनि में जन्म लेने के कारण आपको मोह, माया, ममता अवश्य घेरेंगीं, लेकिन आपके इष्ट तुरन्त आपको ज्ञान, प्रदान कर उस माया से मुक्ति दिलायेंगे। आप उस महामाया को, माया को समझ लेंगे। वैसे माया बहुत ही शक्तिमान है और किसी को नहीं छोड़ती है। ज्ञानी पुरुष जिन्होंने तत्त्व से उस परम सत्ता को कण-कण में व्याप्त समझ लिया है वे भी महामाया की इच्छा से माया में फँस जाता है—“ज्ञानीनामपि चेतांसि, देवी भगवती हिंसा। बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।” अतः इससे घबरायें नहीं। आपके इष्ट अपनी कृपा द्वारा आपको विदेह बना देंगे। ऐसा मेरा विश्वास है।

जब आप अपने आपको पूर्णरूपेण अपने इष्ट को समर्पण कर देंगे तो आप अपने आप मोह माया ममता एवं चिन्ताओं से मुक्त पायेंगे। पत्नी अपने पति पर अपना भार देकर कैसे निश्चिन्त होकर उनके साथ विचरण

करती है। बच्चे अपने बाप के साथ किस प्रकार निश्चिंत चलते हैं तब फिर आप क्या निश्चिंत होकर इस संसार को पार नहीं कर सकते हैं ? इस संसार सागर को अगर आप पार करना चाहते हैं तो आपके लिए सिर्फ एक ही रास्ता है वह है अपने आपको अपने इष्ट पर पूर्णरूपेण समर्पित कर देना। न सोचति न कांछति। किसी भी चीज के प्रति आसक्ति न रखें। कोई भी आपका अपना नहीं है। अगर मिलन में सुख की अनुभूति नहीं होती है तो बिछुड़न में दुःख क्यों होगा। अपने परिवार के सदस्यों का आप सिर्फ एक केयर टेकर हैं। इतना ही आपको समझना है। इच्छाओं का अन्त नहीं है। इच्छायें रक्तबीज हैं। एक की पूर्ति होते ही रक्तबीज के सदृश्य दूसरी खड़ी हो जायगी जो पहले से भी ज्यादा ताकतवर होगी।

कोई भी अन्य साधन आपको मोह, माया, काम, क्रोध, चिन्ताओं से मुक्त नहीं करा सकता है। आप पूजा पाठ की विधि जानते नहीं हैं। भगवन रीझेला, रीझावेला कवन गुणमा पर यह कोई नहीं जानता है। अता आप सब छोड़कर जिस पर आपको विश्वास हो चाहे राम हो, कृष्ण हो, शिव हो, हनुमान हो या माँ काली, दुर्गा हो, अल्ला हो, ईशा मसीह हो, किसी एक पर पूर्ण विश्वास कर अपने को समर्पित कर दें। सभी एक ही हैं, नाम भलग-भलग है। भगवान कहते हैं “एको अहम बहुश्यामः” फिर एक ही साधे, सब सधे, सब साधे सब जाय।

एक साधक ने ठीक ही कहा है मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में, तू अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में। विधि का विधान मान, हानि लाभ सहिये, जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये।

आप इस संसार में कुछ ही दिनों के लिए आये हैं। यह आपका घर नहीं है, आपको अपने घर, जो आपका है वहाँ लौटना है। इस घर के बारे में आप मत सोचिये, उस घर के बारे में सोचिये जो आपका अपना है। जिस घर में आप अभी रह रहे हैं वहाँ आपसे पहले भी कोई रह रहा था, आपके बाद भी कोई रहेगा। इस कुर्सी पर आपसे पहले भी कोई बैठा है, आपके बाद भी कोई बैठेगा। फिर यह कुर्सी आपकी कैसे है ? इससे आप क्यों मोह कर रहे हैं ? आप कुछ लेकर नहीं जायेंगे। सब यहाँ रह जायगा। आपके साथ कोई नहीं जायगा। मैंने माँ की इच्छा से कुछ कह दिया है। उन्होंने क्या कहलवाया है यह वही जानें।

अन्त में माँ से आप सबों के कल्याण के लिए प्रार्थना करता हूँ।

“दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या

सर्वोपकारकरणाय सदाद्र्चित्ता ॥”

इति शुभम्

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए

(वर्ष 1995-96 के वार्षिक कार्यक्रम से उद्धृत)

अध्याय—2

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन

सरकार की नीति है कि राजभाषा के कार्यान्वयन की प्रगति, प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा की जाए। इसके अनुरूप राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा अन्य उपायों के साथ-साथ कई प्रोत्साहन योजनाएँ चालू की गई, जो इस प्रकार हैं :—

2.1 राजभाषा शील्ड तथा ट्रांफी प्रदान करने की योजना :

इन्दिरा गांधी राजभाषा शील्ड और इन्दिरागांधी राजभाषा पुरस्कार।

केन्द्रीय हिन्दी समिति की सिफारिशों के अनुसरण में, विभिन्न मंत्रालयों/विभागों बैंकों और वित्तीय संस्थाओं, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और व्यक्तियों को सरकार की राजभाषा नीति को बढ़ावा देने के कार्य में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए पुरस्कार प्रदान करने हेतु एक योजना लागू की गई है। इस पुरस्कार का नाम “इन्दिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार” है। यह वित्त वर्ष 1986-87 से लागू है और इसके विम्नलिखित पाँच मुख्य भाग हैं :—

(क) भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों के लिए इन्दिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

(ख) बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं के लिए इन्दिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

(ग) भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए इन्दिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

(घ) व्यक्तियों द्वारा हिन्दी में लिखी गई मौलिक पुस्तकों के लिए, इन्दिरा गांधी पुरस्कार।

(ङ) वर्ष 1990-91 से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को भी पुरस्कार योजना में शामिल किया गया है। ‘क’ ‘ख’ और ‘ग’ क्षेत्र में से प्रत्येक क्षेत्र में एक सर्वश्रेष्ठ समिति को पुरस्कृत करने का प्रावधान है।

विभिन्न पुरस्कारों के व्योरे और इसके संबंध में अपनाई-जाने वाली मूल्यांकन विधि नीचे दी जा रही है :—

(क) भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों के लिए इन्दिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

प्रत्येक वर्ष तीन शील्डें योग्यताक्रम से भारत सरकार के उन मंत्रालयों/विभागों को प्रदान की जाएंगी जो केन्द्रीय सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सर्वोत्कृष्ट घोषित किए जाएंगे। मंत्रालयों और विभागों के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन पहले परिचलित किए गए मापदण्डों के अनुसार किया जाएगा।

(ख) बैंकों और केन्द्रीय सरकार की वित्तीय संस्थाओं के लिए इन्दिरा गांधी राजभाषा शील्ड ।

तीन शील्डें उन वित्तीय संस्थाओं व बैंकों के लिए दिए जाने का प्रावधान है, जिन्होंने अपने संगठनों में राजभाषा नीति को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्ट कार्य किया है । तीन सर्वोत्कृष्ट संस्थाओं का निर्धारण करने में राजभाषा विभाग को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सहयोग प्रदान किया जाता है; जो सामान्यतः वित्तीय संस्थाओं के कार्य का पर्यवेक्षण करता है ।

(ग) भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए इन्दिरा गांधी राजभाषा शील्ड ।

“क”, “ख” और “ग” क्षेत्रों में से प्रत्येक क्षेत्र के लिए तीन-तीन पुरस्कार देने का प्रावधान है । इन नौ संगठनों का निर्धारण करने में राजभाषा विभाग को उद्योग मंत्रालय के लोक उद्यम विभाग से सहयोग प्राप्त होता है ।

(घ) हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए इन्दिरा गांधी पुरस्कार

कर्मचारियों का जिन विषयों से सरकारी तौर पर संबंध हो उन पर हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु ऐसी पुस्तकों के लिए तीन पुरस्कार प्रारंभ करने का प्रावधान है जो सर्वोत्कृष्ट घोषित हों और जिनसे विभिन्न सरकारी विभागों में हिन्दी के अगामी प्रयोग को बढ़ावा देने में सहायता मिलती हो । पुरस्कारों की राशि निम्न प्रकार से है ।—

प्रथम पुरस्कार

— 10,000 रु०

द्वितीय पुरस्कार

— 8,000 रु०

तृतीय पुरस्कार

— 5,000 रु०

किसी विशेष वर्ष में पुरस्कार प्रदान किए जाने के संदर्भ में विचार करने के लिए प्रस्तुत की जाने वाली पुस्तकें उससे पिछले वित्त वर्ष में लिखी हुई अथवा प्रकाशित हुई होनी चाहिए और कर्मचारी जिस मंत्रालय/विभाग से संबंधित हो, उस मंत्रालय/विभाग द्वारा इनकी विधिवत् सिफारिश की जानी चाहिए । भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों की संख्या को ध्यान में रखते, हुए प्रत्येक मंत्रालय/विभाग को अधिक से अधिक दो ही पुस्तकों पर विचार करने के लिए प्राप्त पुस्तकों का मूल्यांकन राजभाषा विभाग में गठित एक समिति द्वारा किया जाएगा । समिति की सिफारिशें गृह मंत्री का अनुमोदन प्राप्त करने के लिए राजभाषा विभाग को प्रस्तुत की जाएंगी । भारत सरकार के मंत्रालय और विभाग अपने कार्य से संबंधित विषयों पर हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए दिए जाने वाले उन पुरस्कारों को भी चालू रखेंगे जो इस विभाग के तारीख 28 मई, 1979 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 11/20034/6/79.रा० भा० (क-2) के परिपालन में आरंभ किए गए थे, तथापि, वे पुरस्कार प्राप्त करने वाली अपनी पुस्तकों के बारे में, हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने के संबंध में ऊपर पैरा 'घ' में उल्लिखित इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार के लिए सिफारिश कर सकते हैं ।

(ड) नगर राज भाषा कार्यान्वयन समितियों के लिये इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा नीति के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के लिए वर्ष 1990-91 से इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड प्रदान की जाती है।

राजभाषा नियमों के अंतर्गत 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र के लिए अलग-अलग एक-एक पुरस्कार दिया जाता है।

2.1.2 हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए प्रोत्साहन

- (क) अनेक मंत्रालयों/विभागों के कार्यक्षेत्र से संबंधित तकनीकी विषयों पर मूल रूप से पुस्तकें लिखने अथवा अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद के लिए चालू की गई प्रोत्साहन योजनाओं को अधिक उदार और आकर्षक बनाया जाना चाहिए और जिन मंत्रालयों/विभागों ने ऐसी योजनाएं शुरू नहीं की हैं उन्हें भी इस प्रकार की योजनाएं चलानी चाहिए।
- (ख) प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत प्रशिक्षकों को विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जिससे कि वे अपने विषय से संबंधित पुस्तकें हिन्दी में भी लिखने लगे अथवा अनुवाद करने का प्रयत्न करके अपेक्षित पाठ्यसामग्री तथा संदर्भ साहित्य का निर्माण कर सकें।
- (ग) केन्द्र सरकार और विश्वविद्यालयों के सेवा विवृत्त सक्षम अधिकारियों तथा प्राध्यापकों के दीर्घ अनुभव और योग्यता का लाभ उठाते हुए उन्हें भी विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वे भी कुछ चुने हुए विषयों पर मूल रूप से हिन्दी में पुस्तकें लिख सकें।

(का.ज्ञा.सं. 11/12013/6/92-रा.भा. (क-2) दिनांक 15-7-92)

2.2 सरकारी कामकाज में मूल-हिन्दी टिप्पण/आलेखन के लिए प्रोत्साहन

राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन संख्या 11-/12013/1/84/रा.भा. (क-2) दिनांक 25 मई, 1984 के तहत जारी की गई प्रोत्साहन योजना प्रारंभ की गई है जो 1 अप्रैल, 1988 से लागू है। इस योजना के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग/संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालय अपने अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए स्वतंत्र रूप से प्रोत्साहन योजना लागू कर सकते हैं।

इस प्रोत्साहन योजना में सभी श्रेणियों के वे अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं जो सरकारी काम पूर्णतः या कुछ हद तक मूल रूप से हिन्दी में करते हैं। इस योजना के अन्तर्गत वे अधिकारी/कर्मचारी पुरस्कार के पात्र होंगे जो 'क' तथा 'ख' क्षेत्र में वर्ष में कम से कम 20 हजार शब्द तथा 'ग' क्षेत्र में वर्ष में कम से कम 10 हजार शब्द हिन्दी में लिखें। इस नई प्रोत्साहन योजना की एक विशेषता यह है कि इसमें मूल टिप्पण व प्रारूपण के अलावा हिन्दी में किए गए अन्य कार्य जिनका सत्यापन किया जा सके, जैसे, रजिस्टर में इंदिराजी, सूची तैयार करना, लिखा का काम आदि भी शामिल किए जाएंगे। पहले की प्रोत्साहन योजना के अनुसार ही आशुलिपिक/टाइपिस्ट, जो सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने संबंधी किसी अन्य योजना के अंतर्गत आते हैं, तथा हिन्दी अधिकारी और हिन्दी अनुवादक जो सामान्यतः अपना काम हिन्दी में करते हैं इस योजना में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे।

पुरस्कार

भाग लेने वाले कर्मचारियों को उनके प्रति वर्ष हिन्दी में किए गए काम के आधार पर निम्नलिखित

नकद पुरस्कार दिए जाएंगे :—

(क) केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक मंत्रालय/विभाग/संबद्ध कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से :—

पहला पुरस्कार (दो पुरस्कार) प्रत्येक 500/- रुपये

दूसरा पुरस्कार (तीन पुरस्कार) प्रत्येक 300/- रुपये

तीसरा पुरस्कार (पांच पुरस्कार) प्रत्येक 150/- रुपये

(ख) केन्द्रीय सरकार के किसी विभाग के प्रत्येक अधीनस्थ कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से :—

पहला पुरस्कार (दो पुरस्कार) प्रत्येक 400/- रुपये

दूसरा पुरस्कार (तीन पुरस्कार) प्रत्येक 200/- रुपये

तीसरा पुरस्कार (पांच पुरस्कार) प्रत्येक 150/- रुपये

[कार्यालय ज्ञापन संख्या- 11/12013/3/-87] रा० भा० (क-2) दिनांक 16.2. 1988

2.3 विशिष्ट क्षेत्रों में मूल कार्य हिन्दी में करने के लिए पुरस्कार योजना

कुछ प्रतिष्ठानों/कार्यालयों में वैज्ञानिकों, तकनीशियनों, प्रचालन कर्मचारियों द्वारा विशिष्ट प्रकार के कार्य किए जाते हैं। उनके लिए भी उचित प्रोत्साहन योजनाएं चालू किए जाने का प्रावधान है; जो संबंधित मंत्रालय/विभाग/उपक्रम आदि द्वारा शुरू की जानी चाहिए।

[कार्यालय ज्ञापन संख्या-11/20015/35/84-रा० भा० (क-2) दिनांक 20-11-1984]

2.4 अंग्रेजी टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को हिन्दी में भी टाइप-लेखन और आशुलिपि कार्य करने के लिए

“प्रोत्साहन भत्ता”

मंत्रालयों/विभागों तथा उनके संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों में कार्य कर रहे उन आशुलिपिकों और टाइपिस्टों को, जो अंग्रेजी आशुलिपि/टाइप जानते हैं और अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी में भी अपना सरकारी कार्य टाइपराइटर/कम्प्यूटर पर करते हैं, क्रमशः 60/- रुपये तथा 40/- रुपये प्रति मास विशेष भत्ता दिया जाता है। केवल वे ही अंग्रेजी टाइपिस्ट/आशुलिपिक इस भत्ते के पात्र होंगे जो हिन्दी में औसतन 5 टिप्पणियां/प्राहप-पत्र प्रति दिन अथवा लगभग 300 टिप्पणियां/प्राहप पत्र प्रति तिमाही टंकित करते हैं। केवल एक या दो पंक्तियों के प्राहप/टिप्पणियां इसमें शामिल नहीं होंगी यह विशेष भत्ता “वेतन” नहीं माना जाएगा और इस राशि पर महंगाई भत्ता, मकान किराया भत्ता, नगर प्रतिकर भत्ता और अन्य भत्ते देय नहीं होंगे।

[का० ज्ञा० सं० 13034/31/85-रा० भा० (ग) दिनांक 16.7.1987]

[का० ज्ञा० सं० 13034/49/90-रा० भा० (ग) दिनांक 25.7.94]

2.5 सब से अच्छा कार्य करने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को पुरस्कार देने की योजना

दिल्ली के बाहर प्रमुख नगरों में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिन्दी कार्य की प्रगति की समीक्षा करने और समस्याओं पर विचार करने के लिए ऐसे नगरों में जहां कम से कम 10 केन्द्रीय सरकार के कार्यालय हैं, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं। इन समितियों की अध्यक्षता नगर के वरिष्ठतम अधिकारी करते हैं। नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों के प्रतिनिधि इन समितियों की बैठकों में सम्मिलित होते हैं। हिन्दी में सब से अच्छा कार्य करने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार दिए जाते हैं।

“रूप यौवन सम्पन्ना विशालकुल सम्भवाः ।
विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धा इव विशङ्काः ॥

अर्थात्

“विद्याहीन मनुष्य का सौंदर्य तथा यौवन बड़े कुल में उत्पन्न होने
के बावजूद शोभित नहीं होता, जैसे बिना गंध के टेसू का फूल ।”

चाणक्य नीति: (महर्षि चाणक्य)

“सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा ।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडैते मम बान्धवाः ॥”

अर्थात्

“सत्य मेरी माता है । ज्ञान मेरा पिता है । धर्म मेरा भाई है ।
दया मेरा मित्र है । शान्ति मेरी स्त्री है और क्षमा मेरा पुत्र है ।
ये छह मेरे बान्धव हैं ।”

—चाणक्यनीति: (महर्षि चाणक्य)

गिरते हैं सभी, मगर कायर, गिरकर न कभी उठ पाते हैं,
सचमुच हैं वही बहादुर जो गिरते हैं फिर उठ जाते हैं।

—आरसी प्रसाद सिंह

यथा तथापि यः पूज्यो यत्र तत्रापि योऽर्चितः ।
योऽपि वा सोऽपि वा योऽसौ देवस्तस्मै नमोस्तुते ॥

—रामचन्द्र मालवीय (सुभाषितावलिः)

“चाहे जैसा भी प्रकार क्यों न हो उसे अर्थात् सब प्रकार से पूजा
के योग्य जहाँ तहाँ भी अर्थात् सर्वज्ञ पूजित, जो कुछ रूप है वह
अर्थात् सर्वस्वरूप है देव तुमको प्रणाम है।”